राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 3 ■ अंक 03 ■ जून 2019 ■ ₹10 ■ पृष्ठ 32

राष्ट्रवाद का परचम

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

அகில பாரதிய வித்யார்த்தி பரிஷத்

AKHIL BHARATIYA VIDYARTHI PARISHAD

NATIONAL EXECUTIVE COUNCIL MEETING

27-29 May 2019, Chennai, Tamilnadu

ABVP

शील
एकता
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
ABVP
केंद्रीय कार्यसमिति बैठक
NEC की
झलकियां

Estd. 1978

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा–क्षेत्र की प्रतिनिधि–पत्रिका

वर्ष 3, अंक 03
जून, 2019

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298

rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नयी दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली-110092 से मुद्रीत।

इस अंक में

05 अभाविप की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद् बैठक चेन्नई में संपन्न, राष्ट्रीय एवं शैक्षिक विषयों पर पारित किये गये पांच प्रस्ताव

संपादकीय 04
THE INDIAN EDUCATION SYSTEM SHOULD INCULCATE SCIENTIFIC VISION AND VALUES 08
मुंबई केमिकल इंस्टीट्यूट घोटाले की हो निष्पक्ष जांच : अभाविप 09
नरेंद्र मोदी को जिताने वाले कौन हैं, क्या चाहते हैं? 10
APPRECIATION TO THE 'NATION FIRST' IDEA OF MANDATE 13
अभाविप, हरियाणा ने 400 प्रतिभावान छात्रों को किया सम्मानित 14
CAMPUS ACTIVISM– THE PATH TOWARDS MAKING OF NEW INDIA 15
ओड़िशा : चक्रवात 'फेनी' से उजड़े परिवारों की मदद के लिए आगे आया परिषद् 16
PRESENT NATIONAL SCENARIO 17
INVESTIGATE TMCP'S ROLE IN VIDYASAGAR COLLEGE HOOLIGANISM INCIDENT: ABVP 18
मासूम ट्वींकल के साथ दुराचार और निर्मम हत्या के विरोध में अभाविप ने किया देशव्यापी प्रदर्शन 19
वायवीय आदर्शों और भावुक प्रतिक्रियाओं का द्वंद्व 20
परीक्षा संचालन में निजी तंत्र के कारण उत्पन्न समस्याओं का हो हल 22
विकासार्थ विद्यार्थी (SFD) : परिषद् का ऐसा प्रकल्प जो आर्थिक, भौतिक विकास के साथ – साथ प्रकृति की ओर ध्यान आकृष्ट कराता है 23
चिकित्सा के क्षेत्र में पीजी की रिक्त सीटों को भरे सरकार: अभाविप 24
बिलखती बेटियां, स्तब्ध समाज 26
एन.आर. एस मेडिकल कॉलेज, कोलकाता में डॉक्टरों पर हमला दुर्भाग्यपूर्ण : अभाविप 27
आम चुनावों के परिणाम भारतीय जनमानस द्वारा राष्ट्रवाद तथा सशक्त नेतृत्व के पक्ष में बड़ा संदेश: अभाविप 28
नई सरकार से उम्मीदें और शिक्षा क्षेत्र की प्राथमिकता 29

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

अभी चुनाव की मतगणना चल ही रही थी कि एक वयोवृद्ध प्राध्यपक का फोन आया। वे मतगणना के रुझान से गदगद थे और अपनी प्रसन्नता को संभाल नहीं पा रहे थे। भावावेश में उन्होंने कहा – भारत ने एक हजार वर्ष बाद अपने लिये निर्णय किया है। उनका मानना था कि 2014 का निर्णय भ्रष्ट और निकम्मी सरकार के विरुद्ध एक जनादेश था। इस बार ऐसा नहीं है। इस बार भारत ने अपनी पहचान को निरंतर दी जा रही चुनौती का प्रत्युत्तर दिया है। यह जनादेश किसी के विरुद्ध नहीं बल्कि भारत और भारतीयता के पक्ष में दिया गया सकारात्मक निर्णय है जिसे स्वतंत्र भारत के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ के रूप में पहचाना जायेगा।

वे बड़े विद्वान हैं, मौलिक चिंतन और सटीक विष्लेषण उनकी विशेषता है। इसलिये वे इतनी गहराई तक जा सके। लेकिन जो सामान्य नागरिक इतनी समृद्ध शब्दावली और गहन अंतर्दृष्टि से सम्पन्न नहीं हैं, वे भी अपने मन में यही सोच पाले बैठे थे। यही कारण है कि जाति, पंथ और क्षेत्र जैसे मुद्दे किनारे हो गये और राष्ट्रीय पहचान और राष्ट्रीय गौरव का प्रश्न केन्द्रीय भूमिका में आ गया।

राष्ट्रीयता का यह प्रवाह इतना तेज था कि तथाकथित सेकुलर, वामपंथी, सोच तो कहीं टिक ही नहीं सकी, टुकड़े-टुकड़े गैंग के एक मात्र प्रत्याशी कन्हैया कुमार, जिनके समर्थन में देश के सारे लिबरल समूहों ने बेगूसराय में डेरा डाल दिया था, को शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा।

राजनीति से परे, अभाविप के लिये यह उत्सव का प्रसंग है। जिस राष्ट्रीय विचार को देश की केन्द्रीय भूमिका में लाने के लिये कार्यकर्ताओं की पीढ़ियां लगीं, उसकी दिशा में यह एक मील का पत्थर है। अभाविप की सफलता केवल यह नहीं है कि एक समविचारी दल की राजनैतिक विजय हुई है। इससे आगे, देश ने भारत और भारतीयता के विचार को अंतःकरण से स्वीकार किया है। देश के छात्र और युवाओं ने इसमें बढ़-चढ़ कर भाग लिया। निस्संदेह, मोदी भारत नहीं हैं, लेकिन 2019 की नरेन्द्र मोदी की जीत भारत की जीत है।

भारत की जीत का अर्थ उस आस्था, उस विश्वास की जीत है जिस पर भारत का भरोसा है। उन जीवन मूल्यों की जीत है जो भारत की पहचान को गढ़ते हैं। यह उस राष्टीय गौरव के भाव की जीत है जो बालाकोट की कार्रवाई के बाद प्रत्येक भारतीय के मन में उत्पन्न हुआ है। यह भारत को विश्वमालिका में उसका यथायोग्य स्थान दिलाने की दिशा में बढ़े हुए कदम की जीत है। वस्तुतः यह उस संकल्प की जीत है जिसे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने अपनी स्थापना के समय लिया था और 1998 में मुंबई के सोमैया मैदान में हुए अपनी स्थापना की स्वर्ण जयंती के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में दोहराया था।

परिषद का विश्वास है कि यह भारत की विकास यात्रा के एक चरण की सम्पूर्ति है तथा अपने सुविचारित वैचारिक अधिष्ठान को आगे बढ़ाने के लिये नये संकल्प लेने का अवसर है। सशक्त, समृद्ध और स्वाभिमानी भारत के अगले चरण की यात्रा का यह प्रस्थान बिन्दु है जिस पर चल कर राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ में शिक्षा क्षेत्र की पुनर्रचना हेतु अभाविप अपनी निर्णायक भूमिका का निर्वाह करेगी।

हार्दिक शुभकामना सहित,

आपका
संपादक

अभाविप की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद् बैठक चेन्नई में संपन्न, राष्ट्रीय एवं शैक्षिक विषयों पर पारित किये गये पांच प्रस्ताव

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के तीन दिवसीय (27 से 29 मई 2019) राष्ट्रीय कार्यकारी बैठक चेन्नई में संपन्न हुई । बैठक के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस. सुबैय्या ने कहा कि विद्यार्थी परिषद् का आकार काफी बढ़ गया है। समय के साथ परिषद् ने भी अपने कार्य पद्धति में काफी बदलाव किया है । पुलवामा में सुरक्षा बलों के ऊपर हुए आत्मघाती हमले के बाद हमारे कार्यकर्ताओं ने आतंकवाद के विरूद्ध देशव्यापी अभियान चलाया। फनी चक्रवात के समय जिस तरह राहत कार्य में परिषद कार्यकर्ता जुड़े थे वह सराहनीय है। जब पूरा देश सिर्फ़ राजनीतिक गतिविधियों में व्यस्त था, केवल परिषद ने ही तेलंगाना के ग़लत परीक्षा प्रणाली के कारण हुए 23 छात्रों के आत्महत्या के विरोध में अभियान चलाया था। उन्होंने कहा कि बदलते समय और परिदृश्य के बावजूद भी हमारी विचारधारा नहीं बदली है।

27 मई को राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. एस. सुबैय्या, राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान एवं राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर ने मां सरस्वती एवं विवेकानंद जी की प्रतिमा का पूजन एवं दीप प्रज्ज्वलित कर राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद्, बैठक का विधिवत उद्घाटन किया । बैठक में अपेक्षित कुल 420 में से 323 कार्यकर्ता एवं परिषद् के मित्र संगठन प्राज्ञिक विद्यार्थी परिषद् नेपाल के तीन (3) पदाधिकारी उपस्थित रहे । बैठक के प्रारंभ में 3 - 4 मई को ओड़िशा में आए 'फनी' चक्रवात में प्राण गंवाये दिवगंत आत्माओं की शांति हेतु मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई ।

राष्ट्र प्रथम की भावना से काम करते हैं अभाविप कार्यकर्ता : आशीष चौहान

चेन्नई में आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद् की बैठक में अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के प्रत्येक कार्यकर्ता राष्ट्र प्रथम की भावना से कार्य करते हैं और हम कभी भी देश विरोधी, अलगाववादी एवं विनाशकारी शक्तियों के मंसूबे को सफल होने नहीं देगें । उन्होंने कहा कि #SelfieWithCampus जैसी पहल के साथ, अभाविप कार्यकर्ता पूरे भारत में 46,000 से अधिक परिसरों में पहुंच गया और इन 46 हजार परिसरों में

से 32 लाख सदस्य राष्ट्र के लिए काम कर रहे हैं। अभाविप केवल कैंडल लाइट मार्च निकालकर महिलाओं की सुरक्षा पर चिंता नहीं जताते बल्कि छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए आत्मरक्षा का गुर भी सिखाते हैं । 'मिशन साहसी' अभियान के तहत आठ लाख से अधिक छात्राओं ने आत्मरक्षा का प्रशिक्षण लिया । वहीं देश के लोकतंत्र में सबकी भागीदारी सुनिश्चित करने करने के उद्देश्य से विद्यार्थी परिषद् ने राष्ट्रव्यापी 'नेशन फर्स्ट - वोटिंग मस्ट' अभियान चलाया, जिसमें भारी मात्रा में लोगों ने रूचि दिखायी और अपने मताधिकार का प्रयोग किया ।

राष्ट्रवाद की भावना को मजबूत करने के लिए, तमिल साहित्य को समृद्ध करना आवश्यक : आंबेकर

राष्ट्रीय कार्यकारिणी को संबोधित करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर ने भारत भर के विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली क्षेत्रीय भाषाओं और साहित्य की खराब स्थिति पर नाराजगी व्यक्त की । उन्होंने कहा कि "तमिल राष्ट्र की महत्वपूर्ण प्राचीन भाषाओं में से एक है। तमिल भाषा में विशाल प्राचीन साहित्य उपलब्ध है, लेकिन इसे देश में कहीं भी ठीक से नहीं पढ़ाया जाता है। राष्ट्रवाद की भावना को मजबूत करने के लिए, तमिल साहित्य को समृद्ध करना आवश्यक है। यह तभी प्राप्त हो सकता है जब साहित्य का आदान-प्रदान बड़े पैमाने पर हो। यह सुनिश्चित करने के लिए कि देश के नागरिक तमिल सीखते हैं और तमिल साहित्य पढ़ते हैं, यह महत्वपूर्ण है कि भारत भर के विश्वविद्यालयों में तमिल भाषा विभाग होना चाहिए, "उन्होंने कार्यकर्ताओं से ऐसे विभागों की जानकारी इकट्ठा करने का आग्रह किया।

वहीं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की आगामी दिशा एवं कार्यों को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि समय और परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए कार्यकर्ताओं को पर्यावरण संरक्षण के लिए आगे आना होगा । परिषद् की आगामी गतिविधियां पर्यावरण के संदर्भ में होना चाहिए खासकर जल संवर्धन और संरक्षण के लिए । प्लास्टिक के अधिकाधिक प्रयोग के कारण जमीनें बंजर होती जा रही है और जीव - जंतुओं की असामयिक मृत्यु हो रही है । विद्यार्थी परिषद् के आयाम विकासार्थ विद्यार्थी (एसएफडी) द्वारा अरसे से पर्यावरण संरक्षण का अभियान चलाया जा रहा है । उन्होंने बताया कि आगामी वर्ष भर में एसएफडी, जल संरक्षण, प्लास्टिक निषेध, स्वच्छता, वैकल्पिक ऊर्जा का स्रोत, ऊर्जा संरक्षण आदि विषय पर जागरूकता अभियान चलाने वाली है । परिषद् के विविध कार्य के बढ़ते स्वरूप के बारे में उन्होंने उपस्थित प्रतिनिधियों को परिचित करवाया साथ ही कार्य के अनुरूप कुल रचनाओं को आयाम, कार्य, गतिविधि, प्रकल्प, कार्य विभाग, कार्यक्रम और प्रकोष्ठ में वर्गीकृत भी किया । छात्रसंघ के नये स्वरूप पर उन्होंने पुनरालोकन की आवश्यकता बताई ।

गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं वामपंथी : डॉ. सुब्बैय्या

वर्ष 1989 में पहली बार मैंने अभाविप के कार्यकारी बैठक में सहभाग लिया, यह बैठक बेंगलूरू में आयोजित हुआ था । जब हम कार्यकारी परिषद में बैठे थे, मुझे हजारों छात्रों की मृत्यु की सूचना मिली। उस समय पूर्वी यूरोप में क्रांति हुआ था । सर्वाहारा की तानाशाही उबाल पर था, इसका असर चीन में भी पड़ा। किसी भी सभ्य समाज में ऐसा कम ही होता है कि देश की सेना अपने ही लोगों का कत्लेआम कर दे लेकिन चार जून 1989 को चीन में ऐसा ही हुआ था । बीजिंग के तियानानमेन चौक पर राजनैतिक और आर्थिक सुधार की मांग कर रहे छात्रों, युवकों और नागरिकों के साथ सरेआम कत्लेआम किया गया । मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि वह कौन-सा क्रांति है, जो खून का प्यासा हो । अचरच की बात यह है कि अक्सर अभिव्यक्ति की आजादी और मानवाधिकार की बात करने वाले वामपंथी तियानानमेन चौक की घटना पर मौन थे । मेरे हिसाब से गिरगिट और वामपंथियों में कोई ज्यादा अंतर नहीं है । एक तरफ ये अभिव्यक्ति/ मानवाधिकार की बात करेंगे वहीं दूसरी तरफ सहशस्त्र क्रांति की। चुनाव के समय गड़चिरोली में वामपंथी आतंकवादी के द्वारा सुरक्षा बल के ऊपर जो आक्रमण हुआ वह इसका उदाहरण है।

जनवरी 2020 में होगा अंतर – राज्य छात्र जीवन दर्शन यात्रा (सील) यात्रा का आयोजन

तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद् के योजना बैठक में बताया गया कि अभाविप के सील प्रकल्प के अंतर्गत अक्टूबर 2019 में सील अध्ययन यात्रा एवं जनवरी 2020 में सील यात्रा की योजना है । योजना के मुताबिक देश भर के सभी राज्यों से चार दर्जन से अधिक विद्यार्थी प्रतिनिधि अक्टूबर 2019 में 15 दिन के लिए पूर्वोत्तर राज्यों के अध्ययन के लिए जायेंगे । वहीं जनवरी 2020 में होने वाले राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा यानी 'सील' यात्रा में पूर्वोत्तर से लगभग 500 विद्यार्थी देश भर के सभी राज्यों में जाकर वहां संस्कृति, परंपरा, जीवनशैली, वेशभूषा इत्यादि से परिचित होंगे । बता दें पूर्वोत्तर के छात्रों को भारत के अन्य भागों के साथ एवं शेष भारत के लोगों का पूर्वोत्तर के साथ आत्मीय संबंध स्थापित करने, एकात्मता का संचार करने हेतु 1966 से सील यात्रा का आयोजन किया जाता है । अभाविप के राज्य विश्वविद्यालय प्रमुख श्रीहरि बोरिकर ने बताया कि सील यात्रा के अलावा, पूर्वोत्तर के छात्रों के लिए अनेक प्रकार के आयोजन आयोजित किये जाते हैं । उन्होंने बताया कि कुछ वर्ष पहले ही हमलोगों ने राष्ट्रीय स्तर पर पूर्वोत्तर छात्र संसद का आयोजन किया था, जिसका सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिला, इसी प्रकार आने वाले समय में भी रचनात्मक आयोजन किये जा सकते हैं ।

वहीं छात्रा कार्य के बारे में बताते हुए अभाविप की अखिल भारतीय छात्रा कार्य प्रमुख ममता यादव ने बैठक में बताया कि अभाविप केवल समस्याओं पर बात नहीं करती अपितु समास्याओं के समाधान पर भी पहल करती है । छात्राओं को निडर व आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से परिषद् के द्वारा "मिशन साहसी " अभियान चलाया गया जिसमें 10 लाख छात्राओं ने भाग लिया एवं लगभग चार लाख छात्राओं ने आत्मरक्षा का प्रशिक्षण लिया ।

देश को जोड़ने का काम कर रही है अभाविप : स्वामी विमूर्तानंद

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद् में देशभर से आये हुए प्रतिनिधियों के स्वागत में नागरिक अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया था । समारोह में अपने संबोधन में रामकृष्ण मठ के स्वामी विमूर्तानंद ने कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, भारत को विनाशकारी तत्वों से बचाने के लिए प्रयासरत है और इसके कार्यकर्ता देश के सांस्कृतिक और देशभक्त दूत के रूप में सेवा कर रहे हैं । उन्होंने कहा कि भारतीय सेना, वायु सेना और नौसेना देश की रक्षा करती है ठीक इसी प्रकार विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ता भारत की सांस्कृतिक विरासत की रक्षा कर रही है। स्वामी विमूर्तानंद ने कहा, "देश के कुछ तत्व भारत को तोड़ने की दिशा में काम कर रहे हैं। लेकिन अभाविप के कार्यकर्ता दशकों से, भारत बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं। "उन्होंने परिषद् कार्यकर्ताओं से स्वामी विवेकानंद के बताये मार्ग पर चलने का आह्वान किया । स्वामी विवेकानंद के एक उद्धरण को उद्धृत करते हुए कहा कि "अपने आप को शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक रूप से कभी भी कमजोर मत बनो । ईश्वर ने हमें महसूस करने के लिए एक दिल, समझने के लिए मस्तिष्क और काम करने के लिए मजबूत हाथ दिये हैं। जैसे ही आप दुनिया में आते हैं, कुछ और पीछे छोड़ देते हैं।" नागरिक अभिनंदन समारोह में स्वामी विमूर्तानंद के अलावे प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एस. गुरुमुर्ती, विल्लुलर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के उपाध्यक्ष जी. वी. सेल्वम, एन.टी.सी. ग्रुप के चेयरमेन व प्रबंध निदेशक के. चन्द्रमोहन, अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस सुबैय्या, महामंत्री आशीष चौहान, अभाविप, तमिलनाडु के प्रदेश अध्यक्ष वी. तमिलनायगम, मंत्री एल कार्तिकेयन उपस्थित थे। स्वागत समिति के सचिव के. चन्द्रमोहन ने सभी अतिथियों को पुष्पगुच्छ व स्मृति चिह्न देकर स्वागत किया एवं आभार ज्ञापन प्रदेश मंत्री एल. कार्तिकेयन ने किया । ■

Akhil Bhartiya Vidyarthi Parisad, National Executive Council Meeting, 27-29 May 2019, Chennai (Tamilnadu)

The Indian education system should inculcate Scientific vision and values

In 21st century, the parameter of overall development of a nation depends on the better educational system of that country. The Indian educational system can be re-established in its original form by adapting in it quality, skilfulness , social values, spiritual guidance and patriotic sentiments. Boosting of Indian thought, method and several genres in education will provide 'internal power' to Indian education. The analysis of education in India is related to national elements and social concerns. The Gurukul system sustained due to its national interest and continuous contact with the society. Acharya Chanakya had considered awakening of national sentiment with education an important factor, the same sprit is being followed by National institution established by Lala Lajpat Rai before independence. where on one hand, the work of social transformation has been done assertively br Mahatma Jyotiba Phule and Savitribai Phule, on the other hand the great tradition of Nalanda , Takshashila has been presented in current education system by Malviya Ji with an example of Banaras Hindu University (BHU). Hence, ABVP firmly believes that inclusion of these expected factors in Indian Education is highly important. The National Executive Council of ABVP demands that these point must be included in the much-anticipated National Educational Policy (NEP).

With several psychological experiment globally , the fact that primary Education must be conducted in mother tongue has been established which leads thoughtfulness, better memory and improvement in fundamental thinking. It is not only suitable for expertise in science, but also to achieve expertise in all the subjects. ABVP has been continuously demanding that the primary education must be done in mother-tongue and local languages must be preferred in school education system.

The various parameters considered for the development of nation such as gross domestic product (GDP), Human Development Sensex etc. too acknowledge the importance and central role of education. Educated and qualitative work force is the actual resource of a nation. To come forward on the path of development Europe, East Asian and South East Asian countries have made there educational systems strong and skilful which is full of respectful sentiments towards the local language and the nation. The countries which were once fighting with an education and poverty have overcome these challenges with inclusion of skill-developmental syllabus in the education system which has opened new ways for employment and entrepreneurship taking leading position in technological knowledge. The National Executive Council of ABVP demands inclusion of qualitative skilful syllabus in Indian education system so that, in the coming decades India does not only lead in service sector but also come forward in technical and manufacturing sector. The knowledge of various process in manufacturing techniques due to learning and reading local languages, can be made available for the larger section of people in the society. Favourable policies help increase in production but the presence of larger number of hi-tech skilled workers establishes one country as the centre of Manufacturing in international prospective. So this NEC of

ABVP believes that skill education in our own languages will be beneficial in order to take the production base on Indian technology to the leading position in international scenario.

Along with quality skill education to make aware about Human values, constitutional duties is also the object of education. For being a good citizen, social understanding, awareness about constitutional duties will develop a healthy society. So Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad Clear stand is that these basic point must be included in education.

Just as the tree can not survive it's roots, the society can not contribute in the growth of the nation by leaving behind there traditions and knowledge and values in the same way. Hence, making required changes educational system, the brave stories and tales of great personalties, freedom fighters, tribal traditions and legends must be included in the syllabus so that the true picture of our country gets highlighted. the incidents of army and it's valour in recent times must also be included in the syllabus. the newly elected government of Rajasthan hurtled the respect of Maharana Pratap and removed Veer Savarkar from the curriculum which they had to forcibly take back. This step is inspired by communal appeasement and disgusting mentality which Diverts education from its social goals. the NEC of ABVP believes that these value points and ideals give inspiration of life to the young generation.

India is an agriculturally prime country and agriculture has made India food sufficient on its own. Hence, agricultural science must be taught in the syllabus so that new technologies bare developed and India moves steadily towards sustainable development goals. The glorious scientific tradition and the leading role of India with regard to law of gravitation, numeric , mathematics, algebra, astronomical science, architect etc. has been acknowledge today by the Manchester University and other international institutions. The pure grammar of Sanskrit and other Indian languages is today used in the development of artificial intelligence. The direction of on laws and constitution must also be towards providing primary educational in regional languages. ABVP presents it's demands to make necessary amendments in this context. Hence, this NEC of ABVP demands from the youth and policy makers that a vast knowledge of Indian cultural values should be inculcated in the education so that the universe is benefited and the foundation for the re-construction of 21st century India can be developed. ■

मुंबई केमिकल इंस्टीट्यूट घोटाले की हो निष्पक्ष जांच : अभाविप

द केमिकल टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट, मुंबई आजकल विवादों में है, विश्वविद्यालय में रोज नारेबाजी और प्रदर्शन हो रहे हैं । अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की मानें तो विश्वविद्यालय में कई वित्तीय घोटाले हो रहे हैं। कुलपति अपनी मनमानी कर रहे हैं। छात्रों का आरोप है कि आईसीटी सुविधाओं से वंचित है। इन सभी मुद्दों की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए । इस संस्था ने सभी आईसीटी पाठ्यक्रमों के लिए 35 हजार रुपये से अधिक शुल्क लेने का फैसला किया है। तकनीकी शिक्षा निदेशालय के दिशानिर्देशों के अनुसार यह मनमाना है। छात्रों ने इस बारे में कई बार संबंधित अधिकारियों से शिकायत की लेकिन अधिकारियों ने शिकायत को नजरअंदाज कर दिया। हालांकि छात्रों की बढ़ते गुस्से को देखकर एक जांच समिति बनाई गई, समिति ने पाया कि पिछले तीन वर्षों से ज्यादा शुल्क लिया गया है। उन्होंने कॉलेज प्रशासन को वापस करने का आदेश दिया। कॉलेज प्रशासन ने आश्वासन दिया कि वे वापस करेंगे लेकिन, उस शुल्क का अभी तक भुगतान नहीं किया गया है। अभाविप ने शुल्क अविलंब शुल्क वापस करने करने एवं पूरे मामले की निष्पक्ष तरीके से जांच करने की मांग की है । अभाविप ने कहना है कि अगर इस पर तुरंत कार्रवाई नहीं हुई तो हम उग्र प्रदर्शन करेंगे। ■

नरेंद्र मोदी को जिताने वाले कौन हैं, क्या चाहते हैं?

हर्षवर्धन त्रिपाठी

नरेंद्र मोदी को जब देश की जनता प्रचंड बहुमत देती है तो दुनिया में प्रसिद्ध भारतीय अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन कहते हैं कि नरेंद्र मोदी ने सत्ता भले जीत ली है, लेकिन विचारों का युद्ध नहीं जीते हैं। नरेंद्र मोदी की जीत को समझने के लिए यही सूत्रवाक्य है। आजादी के बाद से लगातार देश की जनता सरकार चुनती थी कि सरकार में चुनकर पहुंचे लोग उसकी भलाई का काम करेंगे, लेकिन सरकार में आते ही काम को छोड़कर अमर्त्य सेन जैसे बुद्धिजीवियों की इच्छा से देश की जनता के साथ वैचारिक युद्ध शुरू करने वाले नेताओं ने कब जनता का भरोसा पूरी तरह से खो दिया, इसका उन्हें अन्दाजा भी नहीं हुआ। अन्दाजा न हो पाने की असली वजह भी यही थी कि सरकार के अलावा कांग्रेस और अभी के पूरे विपक्ष के पास जनता से जुड़ने का कोई तरीका ही नहीं था। और, देश की जनता से काटने का काम इसलिए भी और सलीके से हो गया कि मुसलमान मतों के किसी भी हाल में भाजपा विरोध में जाना तय हो गया था। आजादी के बाद से ही सत्ता सिर्फ कांग्रेस ही चला सकती है, इसे भी जोर शोर से स्थापित किया गया और राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय भावना को खत्म करके आयातित विचार को स्थापित करने की जहरीली मंशा में वामपंथ ने कांग्रेस को सत्ताधारी पार्टी स्थापित करने में पूरा साथ दिया। इसके एवज में वैचारिक अधिष्ठानों पर वामपंथी बुद्धिजीवियों को कब्जा देते कांग्रेस ने कब आजादी के पहले वाली कांग्रेस को दफन कर दिया, उसे पता ही न चला। इस सब पर आखिरी कील ठोंकी गयी, जब 17 अप्रैल 1999 को अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार सिर्फ 1 मत से विश्वासमत हार गयी। अटल बिहारी बाजपेयी सदन में विश्वासमत भले हार गये, लेकिन सच्चाई यही थी कि देश की जनता का विश्वास अटल जी ने जीत लिया था। जयललिता की पार्टी एआईएडीएमके ने अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार से समर्थन वापस ले लिया था। उसके बाद तुरंत हुए चुनाव में अटल बिहारी वाजपेयी की अगुआई में 20 पार्टियों वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को 269 सीटें मिलीं थीं और तब 29 सीटें जीतने वाली चंद्रबाबू नायडू की तेलुगुदेशम पार्टी ने अटल जी की सरकार को समर्थन दे दिया था। सितम्बर-अक्टूबर 1999 में हुए उस चुनाव में भाजपा को करीब 24 प्रतिशत और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को 37 प्रतिशत से ज्यादा मत मिले थे। भारतीय जनता पार्टी को अकेले 182 सीटें मिलीं थीं और उस समय कांग्रेस और दूसरे विपक्षी दलों ने इसे चेतावनी के तौर पर देखने के बजाय ऐसे देखा कि अभी भी पूर्ण बहुमत से करीब 100 सीटों की कमी भाजपा को रह गयी है और 2004 में जब भारतीय जनता पार्टी सरकार बनाने रह गयी तो कांग्रेस सहित दूसरी भाजपा विरोधी पार्टियों और

बुद्धिजीवियों ने इसे पक्के तौर पर स्थापित करने में अपनी ताकत लगा दी जबकि 2004 में सरकार बनी तो इसका मौका कांग्रेस लोगों तक जाने में कर सकती थी, लेकिन सरकार में आते ही कांग्रेस सिर्फ शासन करती है और वही कांग्रेस ने 2004 में भी किया।

2004 के लोकसभा चुनाव में भी कांग्रेस को 145 सीटें ही मिल सकीं थीं और भाजपा की सीटें 182 से घटकर 138 रह गईं थीं। तब कहा गया कि इंडिया शाइनिंग उल्टा पड़ गया। उस समय देश में माहौल बनाने-बिगाड़ने का काम वही अमर्त्य सेन जैसे स्वनामधन्य संपादक और बुद्धिजीवी करते थे जो वैचारिक युद्ध की मुद्रा में हमेशा रहते थे, उन्हें देश की जनता के लिए सरकार काम करे, इससे उन्हें कोई वास्ता नहीं था। कमाल की बात वैचारिक युद्ध लड़ते खुद को वो सरकोरी भी कहा करते थे। कांग्रेस की सत्ता में भ्रष्टाचार जमकर हुआ, लेकिन 2009 में अटल बिहारी वाजपेयी के सक्रिय राजनीति में न होने और लालकृष्ण आडवाणी के पारंपरिक तरीके से कांग्रेस को चुनौती देने की वजह से कांग्रेस को ही फायदा हो गया और इसकी बुनियाद पक्की करने में स्वनामधन्य संपादकों और बुद्धिजीवियों ने खूब काम किया। कांग्रेसी सत्ता के सहयोग से खड़े हो गये कई बड़े मीडिया घराने इसका साक्षात प्रमाण हैं। कांग्रेसी सत्ता के सहयोग से खड़े और बड़े हुए मीडिया संस्थानों की बनाई हवा में कांग्रेस को 2009 के लोकसभा चुनाव में अकेले 209 सीटें मिल गईं और भाजपा लालकृष्ण आडवाणी की अगुआई में 138 से घटकर 116 पर आ गई, लेकिन इसी बीच 21 मार्च 2005 को सैन फ्रांसिस्को में ट्विटर की शुरुआत हो गयी थी और उससे पहले फरवरी 2004 को मेसाचुसेट्स में फेसबुक की शुरुआत हो गयी। सिर्फ सत्ता और स्वनामधन्य संपादक और बुद्धिजीवियों के जरिये जनता से संपर्क करने वाली कांग्रेस पार्टी और दूसरी भाजपा विरोधी पार्टियों को इसका अन्दाजा ही नहीं था कि दुनिया में बातचीत करने, संपर्क करने के तरीके में कितना बड़ा बदलाव होने जा रहा है। संयोग देखिए कि मार्च 2009 में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को डॉक्टर मोहनराव भागवत नये सरसंघचालक के तौर पर संघ को एकदम से समयानुकूल करने का व्रत लेकर आ चुके थे। भागवत जी ने लगातार एक कुंआं, एक मंदिर, एक श्मशान को स्थापित करना शुरू किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पहले सरसंघचालक डॉक्टर केशवराव बलिराम हेडगेवार जी जैसे दिखने वाले भागवत जी संघ को पुनर्स्थापित कर रहे थे। दोबारा बिना किसी पक्की वजह के सत्ता में आई कांग्रेस और दूसरी भाजपा विरोधी पार्टियां सत्ता के मद में अंधी हो गईं। आजाद भारत के इतिहास के सबसे बड़े घोटाले इसी दौरान हुए। हिन्दू मान्यताओं, प्रतीकों का मजाक बनाया जाने लगा। सही नेतृत्व न मिलने से भाजपा 2009 में अपेक्षित सफलता न पा सकी थी।

स्वनामधन्य संपादकों और बुद्धिजीवियों की लगातार, ज्यादातर बेवजह आलोचना से परेशान भारतीय जनता पार्टी ने इस संपर्क के नये तरीके पर ध्यान देना शुरू किया। विदेश गये भारतीयों ने देखा कि कैसे भारत की कांग्रेस की अगुआई वाली सरकारें जनता को ही दरकिनार कर रही हैं। अमेरिकी में बैठे तकनीक के अगुआ भारतीयों ने राष्ट्रवाद के पक्ष में माहौल बनाना शुरू किया। तब भी कांग्रेसी इकोसिस्टम ने प्रवासी भारतीयों का मजाक ही उड़ाया। बिना किसी ट्विटर या फेसबुक जैसे - बौद्धिक के जरिये देश की जनता से लगातार अपना संपर्क बढ़ाता गया और उसी बढ़े संपर्क के आधार पर राष्ट्रीय विचार का प्रभाव, प्रवाह बढ़ता चला गया। उधर गुजरात में नरेंद्र मोदी लगातार कांग्रेस से हटकर एक अलग सरकार को मजबूती से चला रहे थे। देश के दूसरे हिस्सों में भारतीय जनता पार्टी की राज्य सरकारें सलीके से चल रही थीं और स्वनामधन्य संपादकों और बुद्धिजीवियों के भाजपा को मुसलमानों को खा जाने वाली पार्टी के तौर पर प्रचारित करने के बावजूद राज्यों की भारतीय जनता पार्टी की

सरकारों ने ऐसा कोई व्यवहार नहीं किया। गुजरात में भी भारतीय जनता पार्टी की सरकार नरेंद्र मोदी की अगुआई में लगातार बिना दंगों के चलती रही। गोधरा की प्रतिक्रिया में हुए गुजरात के दंगे इसका अकेला अपवाद रहे। इसके बावजूद नरेंद्र मोदी को आततायी बनाने वाले लेख लिखे जाते रहे। इस सबका असर सामाजिक मीडिया के माध्यम से देश की जनता पर मोदी के पक्ष में प्रभाव हुआ। गुजरात के मुख्यमंत्री रहते नरेंद्र मोदी ने नये भारत से बात करना शुरू कर दिया था। अमित शाह पहले गुजरात में नरेंद्र मोदी के सिपहसालार के तौर पर और फिर उत्तर प्रदेश के प्रभारी, उसके बाद भाजपा अध्यक्ष के तौर पर पूरी भाजपा के प्रतिक्षण तैयार राजनीतिक पार्टी के तौर पर तैयार करने में कामयाब रहे। जमीन पर हर तरह के जातीय, सामाजिक गणित की काट खोजते रहे और हर आधुनिक मंच पर नरेंद्र मोदी जब नये भारत से बात कर रहे थे, उनको सपने दिखा रहे थे, उनके सपनों को सच बनाने की योजना बना रहे थे तो देश की दूसरी पार्टियां सिर्फ इसी भ्रम में जी रही थीं कि मुसलमानों और दलितों, यादवों के मत न मिलने से कैसे भारतीय जनता पार्टी कभी भी 272 का जादुई आंकड़ा पार नहीं कर सकती। यहां यह बात सबके ध्यान में जरूर रहे के सामाजिक न्याय के आवरण में पली-बढ़ी घोर जातिवादी पार्टियों- समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी और राष्ट्रीय जनता दल- ने 2004 और 2009 में कांग्रेस की सरकार बनाने में मदद की थी।

कांग्रेसी इकोसिस्टम की मदद से खड़े और बड़े हुए स्वनामधन्य संपादकों और बुद्धिजीवियों ने राष्ट्रीय विचारों की क्षमता को प्रोपागैंडा मशीनरी कहकर दुष्प्रचार किया, लेकिन नया मीडिया संपादकों की मठाधीशी खत्म कर रहा था। संपादक नये मीडिया पर आवरणविहीन हो रहे थे, लगातार पिट रहे थे। और, नए भारत ने 2014 में भारतीय जनता पार्टी को अकेले पूर्ण बहुमत देकर आजाद भारत में तैयार किए गए सबसे बड़े झूठ को बेनकाब कर दिया ।

कांग्रेसी इकोसिस्टम की मदद से खड़े और बड़े हुए स्वनामधन्य संपादकों और बुद्धिजीवियों ने राष्ट्रीय विचारों की क्षमता को प्रोपागैंडा मशीनरी कहकर दुष्प्रचार किया, लेकिन नया मीडिया संपादकों की मठाधीशी खत्म कर रहा था। संपादक नये मीडिया पर आवरणविहीन हो रहे थे, लगातार पिट रहे थे। और, नए भारत ने 2014 में भारतीय जनता पार्टी को अकेले पूर्ण बहुमत देकर आजाद भारत में तैयार किए गए सबसे बड़े झूठ को बेनकाब कर दिया, लेकिन कमाल देखिए कि इससे भी न तो कांग्रेस ने सबक लिया और न ही उसके तैयार किए स्वनामधन्य संपादकों और बुद्धिजीवियों ने। 2019 के चुनाव में भी जातीय गणित के साथ मुसलमान जोड़कर मजे से कांग्रेस अगुआई वाली सरकार बनाते रहे। पहले एमवाई यानी मुसलमान-यादव, डीएम यानी दलित-मुसलमान और जब सपा-बसपा मिल गए तो डीएमवाई यानी दलित मुस्लिम यादव जोड़कर बताया कि कैसे भाजपा को उत्तर प्रदेश में कुछ सीटें मिलना भी असंभव है। बिहार में तो ऐसे बुद्धिजीवी एक और गणित लेकर आए थे जो पहले बेरोजगारी का आंकड़ा गिनाते रहे और नरेंद्र मोदी देश के सबसे निचली पायदान पर खड़े भारतीयों को भारत सरकार की योजनाओं से सीधा लाभ देना शुरू किया। इस दौरान जब भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, राममंदिर बनाने की बात करते तो कांग्रेस सहित जातीय गणित के दंभ में डूबी पार्टियां और उनके समर्थक बुद्धिजीवी राममंदिर का मामला किसी भी हाल में रोकने के लिए सर्वोच्च न्यायालय में अपील कर रहे थे कि इससे भारतीय जनता पार्टी और नरेंद्र मोदी को फायदा हो सकता है। गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में जनता ने संकेत दिया कि सरकार से जनता नाराज तो होती है, लेकिन सकारात्मक राजनीति के पक्ष में ही रहती है। कांग्रेस सहित दूसरी विपक्षी पार्टियों ने नये भारत पर ही सीधे सवाल खड़ा करना शुरू कर दिया कि ईवीएम ही खराब है। तकनीक से दुनिया जीतने वाले नये भारत को विपक्ष की ऐसी हरकतें चुभ रहीं थीं और नतीजा 2019 का प्रचंड बहुमत रहा। अब इस प्रचंड बहुमत की नरेंद्र मोदी सरकार से बहुत स्पष्ट उम्मीद हैं। विकास, तरक्की जरूरी है, सबका साथ सबका विकास इसीलिए लोगों को लुभाता है। भारतीय सांस्कृतिक गौरव के लिए अयोध्या में राममंदिर निर्माण की उम्मीद भी सबका साथ, सबका विकास में जुड़ी हुई है। नये भारत ने नरेंद्र मोदी को जिताया है और नया, विश्व में सामर्थ्यवान देश के तौर पर पहचान वाला भारत बने, यही इन नये भारत की चाहत है। ■

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

Akhil Bhartiya Vidyarthi Parisad, National Executive Council Meeting, 27-29 May 2019, Chennai (Tamilnadu)

Appreciation to the 'Nation First' idea of Mandate

The National Executive Council congratulates everyone for the victory of nationalist ideas in the recently held elections. We are grateful to the voters of nation to fulfil a distant dream that voters will vote over and obove the boundaries of caste, sect, language and narrow sectarian identity revolving around region. We also congratulate the Karyakartas of ABVP for successful campaign of "Nation First, Voting Must" and success in bringing the clarity that the vote must be casted for national policy and not mere cheap politics. We express happiness that in spite of anti-national and malicious propaganda, the NOTA as vote percentage has decreased and the overall increase in the voting percentage. We also appreciate the Election Commission of India to complete the election process error-free, successful and impartially. We express our gratitude to para-military forces, government machinery, and other system for their success in highly-sensitive areas, terror-affected areas, and naturally adverse area.

The people have broken the narrow political bondage of negative social engineering continuing since 6 decades by prioritizing national interest over everything. In this elections, the political paradigm of nation's politics has taken a clear and tectonic shift. The voters have established that they want the direction of politics in positive direction. The Indian populace has established that the politics will now revolve around the aspiration, expectations, necessities, national identity, it's soul. In light of these facts, the National Executive Council of ABVP appeals to the opposition to play constructive role effectively and will raise the question of concerns of populace to assist in the development of India.

As a result of effective implementation of its responsibility from 2014-19, the acceptability and expectations from this government. The National Executive Council of ABVP expects that the new government has the opportunity to respect the folksiest and contribute for national development with a qualitatively effective governance process focusing on welfare, national identity and strengthen in the image of India at global level. ■

प्रिय मित्रों !

शिक्षा - क्षेत्र की प्रतिनिधि - पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' जून 2019 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई - मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
rashtriyachhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

अभाविप, हरियाणा ने 400 प्रतिभावान छात्रों को किया सम्मानित

अभाविप हरियाणा प्रांत के द्वारा सोनीपत में सेक्टर 11 स्थित गेटवे शिक्षण संस्थान में प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह में शिक्षा, खेल व कला के क्षेत्र में अपने - अपने स्कूलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 400 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इसके साथ साथ विभिन्न विद्यालयों के उत्कृष्ट परिणाम देने वाले 40 अध्यापकों को भी उत्कृष्ट अध्यापक सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों, शिक्षकों व अभिभावकों को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य इंद्रेश कुमार ने कहा कि छात्र इस देश का आधार है । समारोह में सम्मानित होने वाली सभी प्रतिभाओं का दायित्व बनता है कि अपनी प्रतिभा को निरंतर बनाए रखें एवं राष्ट्रीय निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं। उन्होंने कहा आज भारत विज्ञान, खेल सैन्य, अध्यात्म के साथ - साथ विश्व भर के देशों में उन्नति व तरक्की के मार्ग में अग्रणी रूप से खड़ा हुआ है, इन सब का श्रेय भारत के इन प्रतिभाओं को ही जाता है ।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री विक्रांत खंडेलवाल ने कहा कि समाज की प्रतिभाओं को उचित सम्मान मिले यह हम सबका दायित्व बनता है इसी कड़ी में विद्यार्थी परिषद समय-समय पर इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन कर प्रतिभाओं को अपने अपने क्षेत्र में और बेहतर करने के लिए प्रोत्साहित करती रहती है। उन्होंने कहा कि छात्र शक्ति देश की सबसे बड़ी शक्ति है यह छात्र कल का नहीं बल्कि आज का नागरिक है। छात्रों को चाहिए कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में बेहतर करते हुए राष्ट्र की उन्नति व तरक्की में अपना योगदान दें। उन्होंने छात्रों से आह्वान किया कि विद्यार्थी परिषद के साथ जुड़कर इस प्रकार के रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से समाज निर्माण के कार्यों में सहभागी बने।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति डॉ. राजेंद्र अनायत ने कहां कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से छात्रों को प्रोत्साहन मिलता है आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है वही कुलपति सुषमा यादव ने भी छात्रों को अपने उद्बोधन के माध्यम से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम मे हरियाणा कला परिषद की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य इंद्रेश कुमार ने शिरकत की । वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता दीनबंधु छोटू राम विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर राजेंद्र अनायत, अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री विक्रांत खंडेलवाल व भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ सुषमा यादव बतौर विशिष्ट अतिथि कार्यक्रम में उपस्थित रहे। मौके पर कुलपति कमलेश मिश्रा, डा. निर्मल खंडेलवाल, प्रदेश मंत्री सुनील भारद्वाज, डॉ सुनील कौशल, मेहर चंद गहलोत, नरेश भार्गव ,अजय यादव कुलसचिव, शशी भूषण, सुनील पारीक ,पुष्कर डॉ.पवन गर्ग सहित अन्य गणमान्य लोग व विभिन्न स्कूलों के प्रतिभावान छात्र उपस्थित रहे। ■

राष्ट्रीय छात्रशक्ति के लिए सोनीपत से संदीप आजाद की रिपोर्ट

Akhil Bhartiya Vidyarthi Parisad, National Executive Council Meeting, 27–29 May 2019, Chennai (Tamilnadu)

Campus Activism- The path towards making of new India

University campus is not just a center of education but also a platform for an individual to have holistic development. In campus a student along with academics also develops the ability to observe and analyse the issue present in the society and thereby develops the quality of leading the society towards development. Problems existing in the campus will not only influence the students but also the society around the campus. As a result of these happenings, stdents empower themselves to transform into a social letter from the campus.

Students are citizens of today and not tomorrow. For them to be the change makers, it is necessary that they understand the issue and suggest a solution for the same. This quality must be inculcated in them from university campuses. The Government is also taking several steps to create such awarness among the students. As per the norms of NAAC in universities, the idea of linking students to society through internships is being promoted and programs such as "thinkering labs" where an analytical atmosphere is created for students and "incubation centers" are providing a platform ideas into business models.

There is a need for every campus to transform into vibrant campus.For sudents must focus on personality development, talent identification, leadership qualities along with their academics. One must also actively participate in sports and cultural activities and must participate in various workshops to upgrade their skills in order to contribute towards society and nation. Students Union plays a very important role in this regard. The main objectives of the student union should be to create a constructive environment in the campus and organise programs to provide a platform for students to showcase their skills. The Students union must be popular and an acceptable body in the campus.

Students should feel responsible not just for their campus but also towards the society. Students must rise above casteism, regionalism and should work towards the issue present in the society. Students for seva is one such platform which engages students in seva activities, Students learn about issues like health, education, women empowerment and safety, environment, water conservation and anti-drug campaign and should work to resolve these issues. This inculcates a leadership quality and volunteerism in the students. Students must transform their campus into a campus that sets an example of social harmony and are free of discrimination. With the same interest ABVP organises Anubhooti that facilitates students to experience the realities in rural areas. One such initiative is also being undertaken by students in IITM Mumbai under the GRA(Group for Rural Activites) which provides internships to learn and provide solutions to rural problems. ■

ओड़िशा : चक्रवात 'फेनी' से उजड़े परिवारों की मदद के लिए आगे आया परिषद्

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने देश भर के लोगों के बीच ओड़िशा के प्रभावितों खासकर छात्रों की मदद के लिए लिए अभियान शुरू किया है, इस अभियान के माध्यम से अभाविप के कार्यकर्ता कलम, नोटबुक, किताबें, बैग आदि एकत्रित कर उसे ओड़िसा के छात्रों के बीच पहुंचाने का काम कर रही है । साथ ही, अभाविप ओड़िशा के द्वारा एक बैंक खाता नंबर भी जारी किया गया है, जिसमें सहयोग राशि जमा की जा सकती है । परिषद् ने ओड़िशा राज्य में चक्रवात फनी से प्रभावित छात्रों की मदद के लिए देशभर में में धन संग्रह अभियान चलाया। अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने कहा कि फेनी चक्रवात के कारण उड़ीसा में 5000 शिक्षण संस्थान बर्बाद हो गए जिनकी वजह से वहां के छात्रों की शिक्षा व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई। इस को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी परिषद ने पुरी एवं भुवनेश्वर जैसे क्षेत्रों के लिए देशभर के छात्रों को जोड़ते हुए राहत कार्य के लिए अभियान चलाने का निर्णय लिया है।

अभाविप इकट्ठा धनराशि का उपयोग छात्रों की मदद के लिए करेगी । अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने कहा है कि विद्यालयों में नए सत्र शुरू हो चुके हैं, इसलिए यह सुनिश्चित करना बेहद जरूरी है कि ओड़िशा के विद्यालयों की पढ़ाई जल्द से जल्द पटरी पर लौटे, साथ ही उच्च शिक्षा हासिल कर रहे छात्र अपनी वार्षिक परीक्षा पर ध्यान केन्द्रित कर सके इसके लिए यथासंभव प्रयास किये जाएं । अभाविप अपने अभियान के माध्यम से एक लाख छात्रों को मदद करेगी । श्री चौहान ने केन्द्र और राज्य सरकार से मांग की है कि फेनी से प्रभावित राज्यों में पुनर्वास के लिए प्रयास तेज हों ।

Bank – State Bank of India
A/C No. – 33395013232
Name– Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) Odisha Relief
IFSC CODE – SBIN0012025
Branch – Sashtri Nagar, Bhubaneshwar

अभाविप के कार्यकर्ताओं ने ओडिशा में फेनी प्रभावित उच्च शिक्षा संस्थानों में चलाया कैम्पस सफाई अभियान

ओडिशा के विनाशकारी चक्रवात फेनी से प्रभावित इलाकों में परिषद् के कार्यकर्ताओं ने जाकर सफाई करना शुरू कर दिया । प्रियंका प्रियदर्शनी मल्लिक ने कहा कि वे पुरी और खुर्दा सहित प्रभावित जिलों में शैक्षणिक संस्थानों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि उन्होंने इस संबंध में 5-दिवसीय अभियान चलाया है और कटक, भुवनेश्वर और पुरी के सभी उच्च शिक्षा संस्थानों के परिसर की सफाई शुरू कर दी है। मल्लिक ने आगे कहा कि वे सरकारी सहायता की प्रतीक्षा नहीं कर रहे हैं और जनता की सेवा के लिए स्वयं काम कर रहे हैं । ओडिशा में चक्रवात फानी के पीड़ितों के लिए अभाविप डोईमुक यूनिट, अरुणाचल प्रदेश के करायतकार राहत कोष इकट्ठा कर रहे हैं। स्थानीय लोगों द्वारा दिखाया गया भारी समर्थन और उदारता विविध देश में अंतर्निहित एकता की पुष्टि करता है। ■

Akhil Bhartiya Vidyarthi Parisad, National Executive Council Meeting, 27-29 May 2019, Chennai (Tamilnadu)

PRESENT NATIONAL SCENARIO

The rising India at global level has again become one such country towards which entire world is looking with aspiration. Healthy Democracy, Effective foreign policy and success achieved in Technological and Satellite field proves the same. Successful test of Anti-Satellite Missile and launching of Cloud Proof Satellite RISE-2B has established India as a Global Super Power. India is moving towards becoming World's Fifth Largest Economic power. Central Government action terrorist and declaration of Masood Azhar as Global Terrorist represents India's strong Foreign and Diplomatic power.

The whole world has appreciated the successful organisations of Kumbh Mela which has left prints of Sanatan Values at International level. India through Roadways, Railways, Airways along with Waterways is moving towards environment preservation using all resources.

ABVP congratulates the Indian Team for winning 17 Medals in recently concluded Asian Athletic Championship.

National Executive Council of ABVP commends the Central Government decision of providing 10% reservation for Economically Backward General Community and introduction of 'Kisan Samman Nidhi' Scheme to empower farmers.

The people have participated highly in recently concluded general elections which reflects the citizens in democracy. Of all the VVPAT machines used in election the physical verification of 20625 machines had Zero Mismatch of votes casted which proves the authenticity of EVM. Some political Parties have raised questions on Neutrality and Independence of Election Commission, a Constitutional Body. Accusations of EVM Hack, Not allowing Hindus to Vote in WEST Bengal, Killing of Political opponents and derogatory comments made by few leaders is condemned by National Executive Council of ABVP.

Today, The Citizens of India are placing National First motto in them and are determined to fight Maoism Infiltrators and Terrorist while on other side the congress which claims to be the harbinger of Independence has stoop so low for political gains that it has started acting against National Interest which is reflected in their Election Manifesto. The Declaration on Continuation of Art 370, Diluting Armed Force power to fight terrorism by removing AFSPA (Armed Force special power) and Removing Sedition from penal code supports the appeasing and divisive forces which is concerning and condemnable.

Strong Opposition is essential for Democracy but the divided opposition should think over its policies. In order to restore itself in power it has turned into Anti-India critic. The National Executive Council of ABVP expect Opposition to play positive role in the development of Nation by taking up issues which concern our country.

While moving constantly in the path of progress India also have some challenges and it is important to identify and resolve them. Therefore, it is the firm opinion of National Executive Council of ABVP that-

1. Financially sick public and private sector industries should be aided and supported by the government concerning the employees in these industries and the country should move towards poverty eradication .

2. Bomb Blast in Sri Lanka and the presence

of radical elements, lint with attacks, in Kerala, Maoist in Dantewada and Gadchiroli and the killings of social and political leaders by terrorist in Kishtwar, Arunachal Pradesh is a matter of concern. Therefore, National Executive Council of ABVP demands that Central government shouls take all stringent action to eradicate of and eliminate terrorists and Maoists.

3. Stringent action be taken against all those who commits act of sexual offences on Women and girls and involved in disturbing the social harmomy.

4. Citizenship Amendment Bill (CAB) should be passed in parliament and should be implement in whole of India.

5. National Executive Council of ABVP appreciates issuing of Early Warning of Cyclone Fani and preparedness of Government and local people to prevent destruction & loss of life and further urge the government to complete the relief work as soon as possible to normalise the life of normal people.

6. The National Executive Council of ABVP appeals countrymen, especially the youths to participate in the development of Country by rising above the cast, religion and region and to strengthen the Democracy. ■

NEWS

Investigate TMCP's Role in Vidyasagar College Hooliganism Incident: ABVP

Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad condemns the violence perpetrated by TMCP goons yesterday evening during a political rally of Bharatiya Janata Party. We demand a thorough investigation of the Trinamool Chhatra Parishad (TMCP) office bearers in the college.

Deliberate provocation by TMCP cadre followed by stone pelting by the same resulted in the college being vandalised. If creating ruckus was not enough, the bust of Ishwar Chandra Vidyasagar, a polymath and a prominent figure in Bengali Renaissance, was desecrated. It is pertinent to note that only the TMCP cadre was inside the college campus when this incident took place. It is shameful that without checking facts, some journalists who are supposed to be unbiased and not act like spokespersons of political parties, have been quick in putting the blame of this entire incident on ABVP. When the incident took place, ABVP was nowhere in the picture.

Further, several testimonies written by students on social media point to the fact that the college gates were locked and there was no possibility of anyone from outside barging in the college. The heavy presence of TMCP cadre in the college also hints towards their involvement in initiating the violence and the ruckus that ensued.

National General Secretary of ABVP Shri Ashish Chauhan said, "We believe that the whole incident is a handiwork of communally charged TMCP goons. Their involvement in the incident should be investigated in depth and stern action should be taken against the perpetrators." ■ ***Report : Saumik Haldhar***

मासूम ट्वींकल के साथ दुराचार और निर्मम हत्या के विरोध में अभाविप ने किया देशव्यापी प्रदर्शन

किसी मासूम के साथ कोई इतनी हैवानियत कैसे कर सकता है। ढाई साल की बच्ची ट्वींकल की पोस्टमार्टम रिपोर्ट देखने के बाद रोंगटें खड़े हो जाते हैं। मन कांप जाता है, दिल दहल जाता और दिमाग सुन्न हो जाता है। दरिंदगी की इंतहा हो गई। निर्मम हत्या का मामला सामने आने के बाद इस घटना ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है । लोगों का गुस्सा चरम पर है । अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ताओं ने ट्वींकल को न्याय दिलाने को लेकर कश्मीर से कन्याकुमारी तक देश व्यापी प्रदर्शन किया, कैंडल मार्च निकाले, हस्ताक्षर अभियान चलाकर दोषियों को फांसी देने की मांग की । 45 डिग्री के तापमान में भी अभाविप की छात्रा कार्यकर्ता चिलचिलाती धूप में सड़कों पर झंडे और नारे लिखी तख्तियां लेकर सरकार से ट्वींकल के साथ जघन्य अपराध करने वालों को फांसी देने की मांग कर रही है । ट्वींकल हम शर्मींदा है तेरे कातिल जिंदा है जैसे नारे लगाकर आक्रोश प्रकट किया ।

अभाविप की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रो. उमा श्रीवास्तव कहती हैं कि बच्चियों के साथ एक के बाद हो रहे जघन्य अपराध देखकर ऐसा लगता है कि लोगों को क्रोध, निराशा, घृणा, प्रतिशोध जैसे मानसिक अवसादों ने क्रूरता से भर दिया हो । जिसका परिणाम छोटी - छोटी बच्चियों के प्रति हो रहे बलात्कारों के रूप में सामने आयेगा, यह दर्दनाक एवं असहनीय है । इस प्रकार के दुराचारों के प्रति विरोध प्रदर्शन समान रूप से नहीं सुनाई देता है । ट्वींकल अब लौट कर नहीं आयेगी लेकिन अब कोई और बच्ची ट्वींकल जैसी प्रताड़ना का शिकार न हो, इसका संकल्प हम सभी को लेना होगा । इस विकृत मानसिकता वाले दुराचारियों को सख्ती से निपटना होगा तभी बेटियां सुरक्षित रह पायेंगी । ■

राष्ट्रीय छात्रशक्ति के लिए हर्षवर्धन की रिपोर्ट

क्या है मामला ?

अलीगढ़ के टप्पल थाना क्षेत्र के मोहल्ला कानून गोयान निवासी ढाई साल की मासूम 30 मई को लापता हो गई थी। दो जून की सुबह शव घर के पास ही कूड़े के ढेर पर मिला था। शव का पोस्टमार्टम तीन डॉक्टरों के पैनल द्वारा किया गया था। डॉ. नवीन कुमार, डॉ. केके शर्मा और डॉ. उज्मा शामिल थीं। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार मरने के बाद शरीर में जो बदलाव होते हैं। उसके बारे में एंटीमार्टम इंजरी (एएमआई) में डॉक्टरों ने विस्तार से लिखा है।

महात्मा गांधी की सार्धशती पर विशेष आलेख श्रृंखला - 9

वायवीय आदर्शों और भावुक प्रतिक्रियाओं का द्वंद्व

|डा. जयप्रकाश सिंह|

परिणामों के आधार पर व्यक्ति अथवा विचार के आकलन की प्रवृत्ति बहुत सहज है और प्रभावी भी। जिन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सिद्धांतों की सवारी की जाती है अथवा निर्णयों की नींव रखी जाती है, यदि उन्हें प्राप्त न किया जा सके तो सिद्धांत और निर्णयों को प्रश्नवाचक मुद्राओं का सामना करना ही पड़ता है। गांधी के सिद्धांतों और निर्णयों को परिणामों की कसौटी पर कसने पर कुछ ऐसे निष्कर्ष हाथ लगते हैं, जो उनके बारे में स्थापित मान्यताओं को झकझोर कर रख देते हैं।

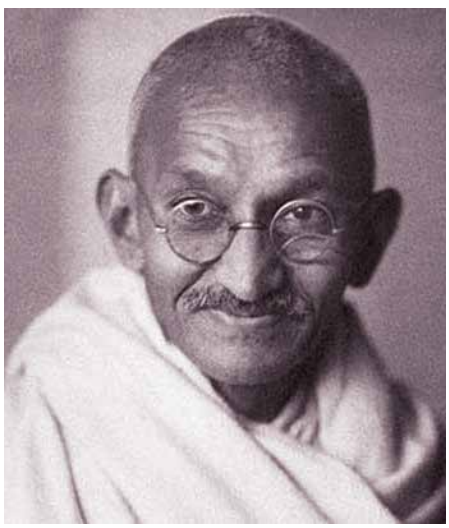

गांधी पूरे जीवन अहिंसा के सिद्धांत को लेकर बहुत आग्रही रहे। वह अहिंसा के जरिए शांति, सौहार्द और भाईचारे का लक्ष्य प्राप्त करना चाहते थे। क्या अहिंसा के उनके उपकरण ने इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में उनकी कोई मदद की ? अथवा उनका यह आग्रह एकपक्षीय साबित हुआ! क्या प्रतिक्रिया के अभाव की स्थिति ने क्रूरताओं को नए सिरे से परवान चढ़ने के अवसर प्रदान नहीं किए ? गांधीकालीन भारत का अवलोकन करें तो इन संभावनाओं को सिरे से खारिज करना मुश्किल हो जाएगा। परिणाम के पैमाने पर गांधी की अहिंसा को प्रश्नों का सामना करने से बचाया नहीं जा सकता।

इसी तरह विभाजन के निर्णय को स्वीकार करना गांधी का बहुत बड़ा निर्णय था। विभाजन से किन लक्ष्यों की प्राप्ति हुई, इस पर बहस की बहुत गुंजाइश है। विभाजन के पक्ष में सबसे बड़ा तर्क यह दिया जाता है कि यह संभावित व्यापक पैमाने पर होने वाले साम्प्रदायिक दंगों को रोकने के लिए किया गया था। लेकिन क्या विभाजन के कारण साम्प्रदायिक दंगे रुक गए। आंकड़ों की गवाही तो इसके उलट ही है। विभाजन के कारण 20 लाख लोग मारे गए, करोड़ों लोगों को विस्थापन का दंश झेलना पड़ा। किस साम्प्रदायिक दंगे में इतने बड़े पैमाने पर जनसंहार होता है। एक अन्य तर्क यह दिया जाता है कि हिन्दू-मुस्लिम एक साथ नहीं रख सकते, इसलिए विभाजन जरूरी था, लेकिन इसके लिए तो जनसंख्या को पूर्ण स्थानांतरण आवश्यक था, जो हुआ नहीं। कुल मिलाकर विभाजन का समाधान हत्या के डर से आत्महत्या करने जैसा था।

गांधी जिस सिद्धांत के बारे में सबसे अधिक आग्रह रखते थे और उनके जिस निर्णय को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है, वे परिणाम के पैमाने पर बुरी तरह विफल हुए। कुछ मायनों में तो उनके सिद्धांतों और निर्णयों ने विपरीत परिणाम दिए। इसलिए परिणाम को आधार मानकर किए जाने वाले आकलन तो गांधी को वायवीय आदर्शवादी ही साबित करते हैं। वह अपने आदर्शों के सम्मोहन में जी रहे थे। उनके आदर्शों में यथार्थ का निवेश शून्य के बराबर थे। और यथार्थ के धरातल के बिना आदर्श की

यात्राओं का औंधेमुंह गिरना तय होता है। गांधी के साथ भी यही हुआ।

प्रश्न यह उठता है कि गांधी ने वायवीय आदर्श के सम्मोहन का शिकार क्यों हो गए। उत्तर मानव-प्रकृति सम्बंधी उनकी मान्यताओं में ढूंढा जा सकता है। गांधी मानव को मूलरूप से अच्छा व्यक्ति मानते थे, जो हमेशा अच्छा सोचता है और अच्छा ही करता है। यह हॉब्स जैसे पश्चिमी राजनीतिक विचारकों के ठीक विपरीत थे। हॉब्स के अनुसार आदमी स्वभाव से ही बुरा होता है, बुरा ही सोचता है और बुरा ही करता है। यह दोनों अतियां है।

भारतीय चिंतन तो मानव-प्रकृति को त्रिगुणात्मक मानता है-सत, रज, तम। प्रत्येक व्यक्ति में यह प्रवृत्तियां रहती है। प्रत्येक व्यक्ति में किसी एक प्रवृत्ति की प्रधानता होती है, अन्य प्रवृत्तियां देश-काल-परिस्थिति के अनुसार अभिव्यक्त होती हैं। इसलिए एक ही व्यक्ति की अलग-अलग परिस्थिति में अलग-अलग मनःस्थिति रहती है। भारतीय चिंतन मानता है कि व्यक्ति अच्छाई या बुराई की स्थिर इकाई नहीं है। इसलिए मानव अथवा मानव-समुदाय के बारे में एक स्थिर अवधारणा बनाना भ्रामक है। दुर्भाग्य यह है कि भारतीयता के प्रति अपने आग्रहों के बावजूद गांधी मानव-प्रकृति को उसकी सम्पूर्ण जटिलताओं के साथ स्वीकार नहीं कर सके। उनके सैद्धांतिकी और निर्णयों के विफल होने का कारण यही है।

> गांधी जिस सिद्धांत के बारे में सबसे अधिक आग्रह रखते थे और उनके जिस निर्णय को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है, वे परिणाम के पैमाने पर बुरी तरह विफल हुए। कुछ मायनों में तो उनके सिद्धांतों और निर्णयों ने विपरीत परिणाम दिए। इसलिए परिणाम को आधार मानकर किए जाने वाले आकलन तो गांधी को वायवीय आदर्शवादी ही साबित करते हैं। वह अपने आदर्शों के सम्मोहन में जी रहे थे। उनके आदर्शों में यथार्थ का निवेश शून्य के बराबर थे। और यथार्थ के धरातल के बिना आदर्श की यात्राओं का औंधेमुंह गिरना तय होता है। गांधी के साथ भी यही हुआ।

दुर्भाग्य यह रहा है कि देश को गांधी की सफलताओं-असफलताओं का खुले मन से विवेचन-विश्लेषण करने का मौका नहीं मिला। विभाजन के बाद गांधी की असफलताएं खुली किताब की तरह लोगों के सामने थीं। इस समय उस समय सबसे अधिक असंतोष और शिकायतें भीं गांधी को लेकर थीं। गांधी के वायवीय आदर्शो की सीमाएं हवाओं में तैर रही थीं। इसी बीच गोडसे की तरफ से एक ऐसा कदम उठता है जिसके कारण गांधी के बारे में मुक्तमन से चर्चा होना असंभव हो जाता है।

न्यायालय में गोडसे को लेकर जो बयान हैं, वह पढ़ने जैसा है, और उनकी मान्यताओं को समझने में सहायक भी। उस पर भी खुले मन से चर्चा होनी चाहिए। लेकिन यह प्रश्न तो बना ही रहेगा कि उनकी भावुक प्रतिक्रिया के कारण क्या उस राष्ट्र-धर्म-संस्कृति की बेहतरी में कोई सहायता मिली, जिसके लिए वह अपना सर्वस्व अर्पण करने की बात करते हैं।

परिणामों के आधार पर गांधी के आकलन से उनकी एक अलग तस्वीर बनती है। यदि गोडसे का भी आकलन इसी आधार पर करें तो यह स्पष्ट हो सकेगा कि उन्होंने इस सभ्यता-संस्कृति को कितनी लाभ-हानि पहुंचाई। गोडसे के मन में चाहे जैसी भावनाएं रही हों, लेकिन उनके एक भावुक कदम ने इस देश की संस्कृति और उसकी संवाहक शक्तियों के सामने एक जटिल स्थिति पैदा कर दी। विरोधियों को ऐसे आख्यान रचने के मौके दिए जो देश-धर्म के खिलाफ थे। नैतिक धरातल पर हम अन्यों के बराबर आ गए। सफाई देने की एक ऐसी मुद्रा ओढ़नी पड़ी, जो अब भी हमारे सिर पर भार के रूप में सवार है।

वायवीय आदर्शो और भावुक प्रतिक्रियाओं के द्वंद्व से यह देश आज भी संतप्त है। एकदम उदात्त नारे या निकृष्ट फौरी प्रतिक्रिया हमारा स्वभाव बन गई हैं। इन दोनों अतियों के बीच सच कहीं कोने में सिसक रहा होता है, सच को सामने लाने वाली साधना दम तोड़ जाती है। दीर्घकालीन रणनीति और संयम की बात पीछे छूट जाती है, वाग्वीर जीभ से तलवारें भाजकर ही युद्ध का निपटारा कर देते हैं। देश को इस द्वंद्व से बाहर निकालने की जरूरत है। सत्य को चरम मूल्य के रूप में स्वीकार करने की आवश्यकता तो है ही, जरूरत उसे प्रतिष्ठित करने की साधना को एकरेखीय और एकवेगीय मानने के भ्रम से बाहर निकलने की भी है। ■

(लेखक हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय में जनसंचार विभाग में सहायक प्राध्यापक हैं।)

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद् बैठक, 26 – 29 मई 2019 चेन्नई (तमिलनाडु)

परीक्षा संचालन में निजी तंत्र के कारण उत्पन्न समस्याओं का हो हल

आधुनिक शिक्षा में प्रवेश, परीक्षा और परिणाम शिक्षा के महत्वपूर्ण घटक हैं । इनकी गुणवत्ता शिक्षा की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । इनका पारदर्शी व निष्पक्ष रूप से क्रियान्यवयन नितांत आवश्यक है । परंतु शिक्षण संस्थानों व विश्वविद्यालयों में संसाधनों, कर्मचारियों व उनमें तकनीकी कुशलता का अभाव और छात्रों की बढ़ती संख्या के कारण कुछ भागों में आउटसोर्सिंग को लाया गया है । जहां एक ओर आउटसोर्सिंग द्वारा शिक्षा क्षेत्र में तकनीकी के उपयोग से प्रवेश, परीक्षा और परिणाम समय पर आना शुरू हुआ तथा अनेक शिक्षण संस्थानों में आउटसोर्सिंग का प्रयोग वैकल्पिक तौर पर सफल भी हुआ है । (राजीव गांधी मेडिकल विश्वविद्यालय में आउटसोर्सिंग का प्रयोग ऑनलाइन पेपर चेंकिग व परिणाम अपडेट करने तक ही किया जाता है) वहीं दूसरी ओर इस प्रथा के कारण शिक्षा व्यवस्था चरमराती हुई प्रतीत हो रही है । सही नीति न होने के कारण भ्रष्टाचार में वृद्धि व विश्वविद्यालय प्रशासन की अदूरदर्शिता के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि आउटसोर्सिंग ने एक विकराल समस्या का रूप धारण कर लिया है । ऐसी कुछ घटनाएं निम्नलिखित है -

- अभाविप की यह राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद् हाल ही में तेलंगाना राज्य में 23 मासूम छात्रों की मृत्यु का जिम्मेवार वहां पर प्रवेश, परीक्षा और परिणाम के लिए की गई अंधाधुंध आउटसोर्सिंग को मानती है ।
- हिमाचल प्रदेश में स्नातक की परीक्षा में गणित विषय का परिणाम 70 फीसदी से घटकर 34 फीसदी हो गया जिसमें 8000 हजार छात्रों को अनुत्तीर्ण व 915 छात्रों को शुन्य अंक प्राप्त हुए ।
- मुंबई विश्वविद्यालय क 150 साल के इतिहास में पहली बार आउटसोर्सिंग के कारण परिणाम आने में देरी हुई और इस साथ ही 9 हजार छात्रों की उत्तर पुस्तिका गायब थी जिस कारण उन छात्रों को औसतन अंक देकर उत्तीर्ण करना पड़ा ।
- मंगलौर विश्वविद्यालय में सुरक्षाकर्मियों की नियुक्ति से लेकर परीक्षा परिणाम तक हर कार्य ठेके पर दिया गया इस कारण करोड़ो रूपये का घोटाला हुआ ।
- वहीं मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर मे आउटसोर्स को ऑनलाइन फॉर्म्स, रिजल्ट प्रिपेरेशन पर दिए जाने वाले भुगतान वर्ष 2016 - 17 में 4.5 करोड़ जबकि 2018 -19 में बढ़कर 5.8 करोड़ हो गया है इसके विपरीत छात्रों की संख्या में कोई वृद्धि नहीं हुई है ।

अभाविप की इस कार्यकारी परिषद् का यह सुविचारित मत व समय की मांग है कि आउटसोर्सिंग पर बहस हो और यह वैकल्पिक व्यवस्था स्थायी रूप न धारण करे इसके लिए मानक तय किये जायें । जो कि आउटसोर्सिंग संस्था की प्रामाणिकता व जवाबदेही को सुनिश्चित करे । औक साथ ही यह भी सुनिश्चित हो कि इसका प्रयोग परीक्षा के आंतरिक मूल्यांकन में न हो और उसकी गोपनीयता बनी रहे ।

अभाविप की यह राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद् केन्द्र व राज्य सरकार से मांग करती है कि सभी विश्वविद्यालयों व शिक्षण संस्थानों को पर्याप्त बजट आवंटन करे और शिक्षा विषय पर ठोस नीतियां बनाये ताकि विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा व परिणाम के संदर्भ में ढ़ांचागत सुविधाओं सहित तकनीकी उपयोग के लिए आत्मनिर्भर बनें । ■

विकासार्थ विद्यार्थी (SFD) : परिषद् का ऐसा प्रकल्प जो आर्थिक, भौतिक विकास के साथ - साथ प्रकृति की ओर ध्यान आकृष्ट कराता है

विकासार्थ विद्यार्थी अर्थात स्टूडेंट्स फॉर डेवलपमेंट, जिसे प्रायः SFD से नाम से लोग जानते हैं, यह परिषद् का एक ऐसा प्रकल्प हो जो आर्थिक, भौतिक, मानवीय विकास से साथ - साथ प्रकृति से जुड़े उन मुद्दों की तरफ ध्यान आकृष्ट कराता है, जिनसे समान्य जनमानस प्रभावित होता है । पर्यावरण की बात करें या सतत आर्थिक विकास के नाम पर पश्चिम का अंधानुकरण की, विकासार्थ विद्यार्थी के इस मंच ने विकास के सही मायने क्या हो, प्रकृति और मानव का सह - अस्तित्व सुरक्षित कैसे रहे, इस दिशा में लोगों को सोचने के लिए प्रेरित करती है । ऊंची - ऊंची इमारतें, चमचमाती गाड़ियां, चौड़ी सड़कें, शेयर बाजार में बढ़ोतरी ही विकास है अथवा इसके परे भी विकास का मॉडल है, जो स्वदेशी और आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों को समाहित करता है, इसके बारे में भी छात्र समुदाय को सोचने के लिए प्रेरित करना विकासार्थ विद्यार्थी का उद्देश्य है ।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के आयाम प्रमुख नागराज रेड्डी बताते हैं कि देश की प्रगति का मॉडल क्या हो ? देशे कैसे और किस तरह तरक्की करें कि वह सतत विकास के साथ - साथ पर्यावरण संरक्षण पर भी बल दे सके, इस उद्देश्य के साथ 1990 में विकासार्थ विद्यार्थी यानी SFD रूपी मंच की स्थापना हुई । आज देश के लगभग सभी इकाईयों में SFD का काम है, जो 'जन चेतना से शाश्वत विकास' के मूलमंत्र को लेकर जल, जमीन, जन, जानवर और जंगल पर केन्द्रित कार्य कर रही है । पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, वैकेल्पिक ऊर्जा के स्रोत, वृक्षारोपण, जल संचयन, अनुभूति आदि विषयों पर जागरूकता के साथ - साथ सामाजिक मुद्दों पर भी SFD मुखर रहती है । SFD के

कार्यों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि 1990 में विभिन्न कथित स्वयंसेवी संस्था, बुद्धिजीवियों के द्वारा नर्मदा बचाओ अभियान चलाया, उस समय SFD ने इस आंदोलन को रचनात्मक रूप से लिया और सकारात्मक और नकारात्मक दोनो पहलुओं पर सर्वे करना शुरू किया । इस बांध के बनने से क्या - क्या लाभ हो सकता है, बांध की तकनीकी खामियों का अध्ययन कर सरकार और समाज को बताने का काम किया । हम सिर्फ विरोध के लिए विरोध नहीं करते हैं । पांच साल पहले SFD के द्वारा नर्मदा अध्ययन यात्रा की शुरूआत की गई । अमकटंक (उद्गम स्थल) से लेकर भरूच तक हमने नर्मदा की यात्रा की और प्रदूषण स्तर, भू - स्खलन, मिट्टी का कटाव, वृक्षों की स्थिति, सिवेज इत्यादि पर अध्ययन कर एक रिपोर्ट तैयार की और न्यायालय में जनहित याचिका दाखिल किया । SFD की याचिका पर न्यायालय ने मध्य प्रदेश सरकार को तलब किया और

मिट्टी के बर्तन बांटकर पक्षियों को गर्मी से बचाने अभाविप ने की पहल

भीषण गर्मी में पक्षियों को प्यास से बचाने अभाविप ने देशभर में अभियान चलाकर लोगों को मिट्टी के बर्तन बांटे। लोगों को मिट्टी के पात्र देकर उन्हें इसमें पानी रखने एवं दाना देने का आग्रह किया गया। परिषद की मानें तो पक्षियों के जीवन की रक्षा उत्कृष्ट मानवीय कार्य है। अभी तेज गर्मी से पारा 45 के पार जा रहा है, ऐसे में पक्षियों को पानी के लिए इधर-उधर भटकना पड़ता है। ठीक प्रकार पर्यावरण की सुरक्षा को लेकर अभाविप के द्वारा देशभर के विभिन्न शैक्षिक परिसरों में पौधरोपण अभियान चलाया जा रहा है तो कहीं व्यक्तित्व विकास शिविर चलाया जा रहा है ।

प्रत्येक महीने नर्मदा के प्रदूषण इत्यादि पर अदालत को रिपोर्ट सौंपने को कहा है । हांलाकि अभी कोई अंतिम फैसला नहीं आया है लेकिन SFD के प्रयास के कारण यह मुद्दा जन-आंदोलन का रूप ले चुका है । इसी तरह बैंगलुरू में हम कैंपस टू कम्यूनिटी प्रोग्राम चलाते हैं जो पूर्णतया कैंपस से छात्रों को प्रकृति और समाज से जोड़ने का काम करती है । सॉलिड वेस्ट मैंनेजमेंट, जल संचयन, शिक्षा इत्यादि को लेकर साल में दो बार इंटर्नशिप प्रोग्राम चलाते हैं जिसमें भारी संख्या में छात्र भाग लेते हैं, इसी प्रकार SFD के द्वारा बैंगलुरू में ही आईडिया कॉन्कलेव की शुरूआत की गई, जिसके तहत बैंगलुरू को और बेहतर व सुंदर बनाने के लिए लोगों के विचार लिये जाते हैं । स्थान और परिस्थिति के अनुसार देश भर में हमारा काम चलते रहता है । जैसे - अभी गर्मी का मौसम है तो SFD के द्वारा पक्षी बचाओं अभियान के तहत मिट्टी के बर्तन में जगह - जगह पानी डालना, पौध रोपण अभियान चलाया जा रहा है । सामाजिक संवेदना को जागरूक करने के उद्देश्य से अनुभूति चलाया जाता है । हम पाश्चात्य की तरह विकास करने पर विश्वास नहीं करते बल्कि भारतीय संस्कृति और प्रकृति पूजन परंपरा के साथ विकास चाहते हैं ताकि आने वाली पीढ़ी के लिए कुछ बचे न कि वर्तमान पीढ़ी ही सब खत्म कर दे । आगामी योजना के बारे में पूछे जाने पर श्री रेड्डी ने कहा कि दिल्ली में यमुना को बचाने एवं जल संरक्षण को लेकर वार्षिक अभियान चलाने वाले हैं, ऐसे ही ठोस अपशिष्ट पदार्थों के पुनर्उपयोग के लिए इंदौर में सॉलिड वेस्ट मैंनेजमेंट कार्यशाला करने वाले हैं । मुंबई और पुणें में SFD के द्वारा वैकेल्पिक ऊर्जा पर काम होना है और बैंगलुरू में ग्रीन एनर्जी पर अभियान चलाने वाले हैं । देश भर विभिन्न गतिविधियों के द्वारा हम समाज को प्रकृति के प्रति जागरूक करने का प्रयास करते हैं । ■

चिकित्सा के क्षेत्र में पीजी की रिक्त सीटों को भरे सरकार: अभाविप

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद मेडिकल में नीट परीक्षा के द्वारा भरे जाने वाली पीजी सीटों में रिक्त 2000 सीटों को भी नीट में मेरिट के आधार पर भरने की मांग करता है। इसी हेतु अभाविप का एक प्रतिनिधिमंडल आज केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ हर्षवर्धन जी से मिला तथा अपनी मांगें उनके समक्ष रखी।

नीट परीक्षा में प्रत्येक वर्ष 50 परसेंटाइल तक ही छात्रों को पीजी कोर्सेज में एडमिशन देने की पात्रता रखी जाती है । परन्तु परीक्षा के परिणाम को देखते हुए प्रत्येक वर्ष इस पात्रता को पीछे रखकर ही पीजी कोर्सेज में एडमिशन दिए गए हैं। विगत वर्ष भी 34 परसेंटाइल तक को प्रवेश प्राप्त हुआ था। अतः अभाविप का स्पष्ट मत है कि एम.बी.बी.एस तथा एक साल अस्पताल में काम करने के पश्चात भी छात्रों के लिए नीट में 50 परसेंटाइल की पात्रता नहीं होनी चाहिए क्योंकि नीट के परिणाम देखते हुए इस पात्रता पर अमल नहीं हो पा रहा है । इसलिए अभाविप नीट परीक्षा से 50 परसेंटाइल की पात्रता को हटाकर मात्र नीट की मेरिट के आधार पर ही मेडिकल के पीजी कोर्सेज में छात्रों को प्रवेश दिए जाने तथा सभी सीटों को भरे जाने की मांग करती है।

इस मुद्दे पर मेडिविजन के राष्ट्रीय संयोजक डॉ चिंतन चौधरी ने कहा कि "रिक्त सभी सीटें एक समय पश्चात विश्वविद्यालयों को वापस कर दी जाती है। जिसके परिणास्वरूप निजी विश्वविद्यालय उनको मैनेजमेंट कोटा के अन्तर्गत डोनेशनस प्राप्त कर छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। अभाविप शिक्षा के क्षेत्र में व्यापारिकरण का विरोध करती है।"

अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री श्री आशीष चौहान ने कहा कि "हमारे देश में चिकित्सकों की आवश्यकता है, ऐसे में मेडिकल के क्षेत्र में रिक्त सीटें चिंता का विषय है इसलिए उनका भरा जाना आवश्यक है। साथ ही नीट की परीक्षा में छात्रों द्वारा अपेक्षित अंक न ला पाना मेडिकल क्षेत्र में एम.बी.बी.एस की शिक्षा के स्तर पर सवाल खड़ा करता है। अभाविप केंद्र सरकार से स्पष्ट मांग करता है कि नीट परीक्षा में परसेंटाइल का आधार हटाकर मेरिट के आधार पर सभी सीटों पर छात्रों को प्रवेश दिया जाए।" ■

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मसौदे का अभाविप ने किया अभिनंदन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रस्तावित राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा जारी करने हेतु हार्दिक आभार ज्ञापित करती है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने यह निर्णय लिया है कि 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' को और बेहतर बनाने हेतु शिक्षाविदों तथा शोधार्थियों की एक समिति का गठन कर, सरकार के समक्ष बिंदुवार विस्तृत सुझाव भेजेगी।

साथ ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद देश के प्रबुद्ध छात्रों, शोधार्थियों, प्राध्यापकों,शिक्षाविदों, समाजसेवियों सहित शिक्षा के क्षेत्र में रूचि रखने वाले नागरिकों से राष्ट्रीय शिक्षा नीति को और बेहतर बनाने हेतु अपना अमूल्य सुझाव सरकार को भेजने का आग्रह करती है।

अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने कहा कि, "21 वीं सदी की युवा पीढ़ी के समक्ष राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक बेहद महत्वपूर्ण पड़ाव है, जिसमें हम सभी को अपने सुझावों को रखना चाहिए। आने वाले दशकों में यह शिक्षा नीति विश्व के सबसे युवा देश की शिक्षा व्यवस्था की दिशा तय करने वाली है, ऐसे में शिक्षा नीति के मसौदे का गंभीरता से अध्ययन कर अंतिम प्रारूप शीघ्र लागू करने की आवश्यकता है। देश के सबसे बड़े और जागरूक छात्र संगठन के रूप में हम शिक्षा नीति को बेहतर बनाने हेतु अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे।" ■

बिलखती बेटियां, स्तब्ध समाज

| प्रो. संजय द्विवेदी |

छोटी बच्चियों के साथ निरंतर हो रही आपराधिक घटनाएं हमारे समाज के माथे पर कलंक ही हैं। यह दुनिया बेटियों के लिए लगातार असुरक्षित होती जा रही है और हमारे हाथ बंधे हुए से लगते हैं। कोई समाज अगर अपनी संततियों की सुरक्षा भी नहीं कर सकता, उनके बचपन को सुरक्षित और संरक्षित नहीं रख सकता तो यह मान लेना चाहिए सडांध बहुत गहरी है। ऐसे समाज का या तो दार्शनिक आधार दरक चुका है या वह सिर्फ एक पाखंडपूर्ण समाज बनकर रह गया है जो बातें तो बड़ी-बड़ी करता है, किंतु उसका आचरण बहुत घटिया है।

स्त्रियों की तरफ देखने का हमारा नजरिया, उनके साथ बरताव करने का रवैया बताता है कि हालात अच्छे नहीं हैं। किंतु चिंता तब और बढ़ जाती है, जब निशाने पर मासूम हों। जिन्होंने अभी-अभी होश संभाला है, दुनिया को देख रहे हैं। परख रहे हैं। समझ रहे हैं। उनके अपने परिचितों, दोस्तों, परिजनों के हाथों किए जा रहे ये हादसे बता रहे हैं कि हम कितने सड़े हुए समाज में रह रहे हैं। हमारी सारी चमकीली प्रगति के मोल क्या हैं, अगर हम अपने बच्चों के खेल के मैदानों में, पास-पड़ोस में जाने से भी सहमने लगें। किंतु ऐसा हो रहा है और हम सहमे हुए हैं। बेटियां जिनकी मौजूदगी से यह दुनिया इतनी सुंदर है, वहशी दरिंदों के निशाने पर हैं।

कानूनों से क्या होगाः बच्चों और स्त्रियों की सुरक्षा को लेकर कानूनों की कमी नहीं है। किंतु उन्हें लागू करने, एक न्यायपूर्ण समाज बनाने की प्रक्रिया में हम विफल जरूर हुए हैं।इन घटनाओं के चलते पुलिस, सरकार और समाज सबका विवेक तथा संवेदनशीलता कसौटी पर है। निर्भया कांड के बाद समाज की आई जागरूकता और सरकार पर बने दबावों का भी हम सही दोहन नहीं कर सके। कम समय में न्याय, संवेदनशील पुलिसिंग और समाज में व्यापक जागरूकता के बिना इन सवालों से जूझा नहीं जा सकता। हमारी 'परिवार' नाम की संस्था जो पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों की स्थापना का मूल स्थान था, पूरी तरह दरक चुकी है। पैसा इस वक्त की सबसे बड़ी ताकत है और जायज-नाजायज पैसे का अंतर खत्म हो चुका है। माता-पिता की व्यस्तताएं, उनकी परिवार चलाने और संसाधन जुटाने की जद्दोजहद में सबसे उपेक्षित तो बच्चा ही हो रहा है। सोशल मीडिया ने इस संवादहीनता के नरक को और चौड़ा किया है। संयुक्त परिवारों की टूटन तो एक सवाल है ही। ऐसे कठिन समय में हमारे बच्चे क्या करें और कहां जाएं? अवसरों से भरी पूरी दुनिया में जब वे पैदा हुए हैं, तो उनका सुरक्षित रहना एक दूसरी चुनौती बन गया है। भारतीय परिवार व्यवस्था पूरी दुनिया में विस्मय और उदाहरण का विषय रही है, किंतु इसके बिखराव और एकल परिवारों ने बच्चों को बेहद अकेला छोड़ दिया है।

स्कूल निभाएं जिम्मेदारीः ऐसे समय में जब परिवार बिखर चुके हैं, समाज की शक्तियां अपने वास्तविक स्वरूप में निष्क्रिय हैं, हमारे विद्यालयों, स्वयंसेवी संगठनों को आगे आना होगा। एक आर्थिक रूप से निर्भर समाज बनाने के साथ-साथ हमें एक नैतिक, संवेदनशील और परदुखकातर समाज भी बनाना होगा। संवेदना का विस्तार परिवार से लेकर समाज तक फैलेगा तो समाज के तमाम कष्ट कम होगें। शिक्षक और सामाजिक कार्यकर्ता इस काम में बड़ा योगदान दे सकते हैं। सही मायने में हमें कई स्तरों पर काम करने की जरूरत है, जिसमें परिवारों और स्कूलों दोनों पर फोकस करना होगा।

परिवार और स्कूलों में नई पीढ़ी को संस्कार, सहअस्तित्व, परस्पर सम्मान और शुचिता के संस्कार देने होगें। स्त्री-पुरुष में कोई छोटा-बड़ा नहीं, कोई खास और कोई कमतर नहीं यह भावनाएं बचपन से बिठानी होगीं। पशुता और मनोविकार के लक्षण हमारी परवरिश, पढ़ाई- लिखाई और समाज में चल रहीं हलचलों से ही उपजते हैं। मोबाइल और मीडिया के तमाम माध्यमों पर उपलब्ध अश्लील और पोर्न सामग्री इसमें उत्प्रेरक की भूमिका निभा रहे हैं। इसके साथ ही समाज में बंटवारे की भावनाएं इतनी गहरी हो रही हैं कि हम स्त्री के विरूद्ध अपराध को पंथों को हिसाब से देख रहे हैं। निर्मम हत्याएं, दुराचार की घटनाएं मानवता के विरुद्ध हैं। पूरे समाज के लिए कलंक हैं। इन घटनाओं पर भी हम अपनी घटिया राजनीति और पंथिक मानसिकता से ग्रस्त होकर टिप्पणी कर रहे हैं। दुनिया के हर हिस्से में हो रहे हमलों, युध्दों, दंगों और आपसी पारिवारिक लड़ाई में भी स्त्री को ही

कमजोर मानकर निशाना बनाया जाता है। यह बीमार सोच और मनोरोगी समाज के लक्षण हैं।

पाखंडपूर्ण समाज और शुतुरमुर्गी सोचः समाज की पाखंडपूर्ण प्रवृत्ति और शुतुरमुर्गी रवैया ऐसे सामाजिक संकटों में साफ दिखता है। साल में दो नवरात्रि पर कन्यापूजन कर बालिकाओं का आशीष लेने वाला समाज, उसी कन्या के लिए जीने लायक हालात नहीं रहने दे रहा है। संकटों से जूझने, दो-दो हाथ करने और समाधान निकालने की हमारी मानसिकता और तैयारी दोनों नहीं है। अलीगढ़, भोपाल से लेकर उज्जैन तक जो कुछ हुआ है, वह बताता है कि हमारा समाज किस गर्त में जा रहा है। हमारी परिवार व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था, समाज व्यवस्था, धर्म सत्ता सब सवालों के घेरे में है। हमारा नैतिक पक्ष,दार्शनिक पक्ष चकनाचूर हो चुका है। हम एक स्वार्थी, व्यक्तिवादी समाज बना रहे हैं, जिसमें पति-पत्नी और बच्चों के अलावा कोई नहीं है। विश्वास का यह संकट दिनों दिन गहरा होता जा रहा है। शायद इसीलिए हमें परिजनों और पड़ोसियों से ज्यादा हिडेन कैमरों और सर्विलेंस के साधनों पर भरोसा ज्यादा है। भरोसे के दरकने का यह संकट दरअसल संवेदना के छीज जाने का भी संकट है।

कैसे बचेंगी बेटियाः बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का नारा जब हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने दिया होगा, तब शायद वे कोख में मारी जानी वाली बेटियों की चिंता कर रहे थे। हमारे समय के एक बड़े संकट भ्रूण हत्या पर उनका संकेत था। लेकिन अब इस नारे के अर्थ बदलने से लगे हैं। लगता है कि अब दुनिया में आ चुकी बेटियों को बचाने के लिए हमें नए नारे देने होगें। एक बेहतर दुनिया किसी भी सभ्य समाज का सपना है। हमारी संस्कृति और परंपरा ने हमें स्त्री के पूजन का पाठ सिखाया है। हम कहते रहे हैं- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' (जहां नारियों की पूजा होता है, वहां देवता वास करते हैं)। हमारी बुद्धि, शक्ति और धन की अधिष्ठात्री भी सरस्वती, दुर्गा-काली और लक्ष्मी जैसी देवियां हैं। बावजूद इसके उन्हें पूजने वाली धरती पर बालिकाओं का जीवन इतना कठिन क्यों हो गया है? यह सवाल हमारे समाने है, हम सबके सामने, पूरे समाज के सामने। हादसे की शिकार बेटियों की चीख हमने आज नहीं सुनी तो मानवता के सामने हम सब अपराधी होगें, यकीन मानिए। ■

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय,भोपाल में मास-कम्युनिकेशन के प्रोफेसर हैं)

एन.आर. एस मेडिकल कॉलेज, कोलकाता में डॉक्टरों पर हमला दुर्भाग्यपूर्ण : अभाविप

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, एन.आर.एस. मेडिकल कॉलेज, कोलकाता में डॉक्टरों पर सुनियोजित तरीके से किए गए हमले की दुर्भाग्यपूर्ण घटना की निंदा करती है। डॉक्टरों तथा शोधार्थियों की हड़ताल के उपरांत जिस तरह पश्चिम बंगाल राज्य सरकार के पोषित गुंडों द्वारा उनपर हमले हुए और महिला डॉक्टरों को बलात्कार करने तथा एसिड फेंकने की धमकियां दी गई, यह पश्चिम बंगाल में खत्म हो चुकी कानून व्यवस्था का स्पष्ट उदाहरण है।

साथ ही पश्चिम बंगाल में लोकतांत्रिक ढंग से अलग-अलग स्थानों पर प्रदर्शन कर रहे डॉक्टरों व छात्रों पर भीड़ के हमले को जिस तरह से प्रदेश सरकार रोकने में विफल रही है, वह आने वाले कुछ दिनों तक प्रदेश की सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं को प्रभावित कर सकती है। अभाविप के आयाम मेडिविजन के सदस्यों द्वारा भी कल कोलकाता में अलग-अलग स्थानों पर प्रदर्शन किए गए जिसमें दो स्थानों पर फिर से भीड़ ने उन पर हमला किया।

मेडीविजन के राष्ट्रीय संयोजक डॉ चिंतन चौधरी ने कहा कि "मासूम चिकित्सकों तथा प्रशिक्षुओं पर बिना कारण भीड़ द्वारा खतरनाक हमला निंदनीय है । ममता बैनर्जी द्वारा चिकित्सकों की सहायता करने के स्थान पर उन्ही को धमकी देना उनके तानाशाही रवैए को दर्शाता है।"

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, घटना में संलिप्त गुंडों के ऊपर सख्त कार्रवाई की मांग करती है। अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने कहा कि, "पश्चिम बंगाल में कानून व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त हो चुकी है। हम केन्द्र सरकार से इस मामले में शीघ्र हस्तक्षेप की मांग करते हैं जिससे स्थिति में सुधार लाया जा सके तथा प्रदेश में ठप पड़ चुकी स्वास्थ्य सेवाओं की बहाली हो सके।" ■

आम चुनावों के परिणाम भारतीय जनमानस द्वारा राष्ट्रवाद तथा सशक्त नेतृत्व के पक्ष में बड़ा संदेशः अभाविप

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, भारतीय नागरिकों द्वारा दिए गए 2019 के आम चुनावों के परिणाम का हार्दिक स्वागत एवं एक सशक्त सरकार का चुनाव करने के लिए भारतीय नागरिकों का अभिनंदन करती है। इन चुनावों के माध्यम से कुछ राज्यों में जातिवादी महामिलावट को नकारने के साथ ही देश के प्रबुद्ध नागरिकों ने सत्य, कर्मठता, ईमानदारी, विकास, राष्ट्रवाद तथा बेहतर प्रशासन के पक्ष को चुनकर एक बार पुनः हिंसा, जातिवाद, क्षेत्रवाद, परिवारवाद, वंशवाद पर गहरा प्रहार किया है।

साथ ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, भारतीय जनता पार्टी नेतृत्वित राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को पुनः ऐतिहासिक एवं बड़ी जीत दर्ज करने पर अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करती है। अभाविप यह आशा करती है कि नई सरकार सभी वर्गों की बेहतरी के लिए पूर्ववर्ती प्रयासों को और भी अधिक गतिशीलता प्रदान कर देश को समृद्धि के उर्वर पथ पर अग्रसर करेगी तथा जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगी।

अभाविप राष्ट्रीय महामंत्री श्री आशीष चौहान ने कहा कि, ‘यह परिणाम देश को अपनी जागीर समझने वाली मानसिकता को देश की लोकतांत्रिक जनता का कड़ा संदेश है, हम आशा करते हैं कि देश स्थिर नेतृत्व में हर क्षेत्र में नए आयामों को प्राप्त करेगा। ■

एल.एल.बी. प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्रों को अभाविप ने उपलब्ध कराया निःशुल्क कोचिंग

अभाविप बिहार के द्वारा एल.एल.बी. की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए एक्सपर्ट के द्वारा निःशुल्क कोचिंग की व्यवस्थी की गई । निःशुल्क कोचिंग के समापन के मौके पर प्रमुख विभुति सिंह ने कहा कि विद्यार्थी परिषद द्वारा आयोजित छात्रहित में इस सकारात्मक पहल के माध्यम से ही एलएलबी प्रवेश परीक्षा, कोचिंग में लगभग 30 छात्र - छात्राओं को लाभान्वित कराने का प्रयास किया गया है। परिषद् सामूहिक अंतर्निहित शक्ति में विश्वास रखकर रचनात्मक कार्य करने वाला छात्र संगठन है । इस कोचिंग के माध्यम से पटना हाई कोर्ट के वकील अनुराग शुक्ला, मान शेखर कुमार, रोशन भारद्वाज, आशुतोष यादव सहित पटना लॉ कॉलेज के मेधावी छात्र अमित कुमार, उपेंद्र उज्जवल, संजीव कुमार एवं विशाल शर्मा द्वारा सभी अभ्यार्थियों को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कार्यक्रम समाप्ति के अवसर पर धन्यवाद ज्ञापन पटना लॉ कॉलेज के अध्यक्ष धर्मेंद्र कुमार द्वारा किया गया। उन्होंने सभी शिक्षाविद, कानूनविद एवं छात्र-छात्राओं को परिषद से जुड़ कर 10 दिवसीय निःशुल्क कोचिंग को संपन्न करवाने के लिए आभार व्यक्त किया । ■

नई सरकार से उम्मीदें और शिक्षा क्षेत्र की प्राथमिकता

केंद्र में नई सरकार का गठन हो चुका है । मंत्रियों के बीच विभागों का बंटवारा भी हो चुका है । मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल से लोगों ने बेशुमार उम्मीदें लगा रखी है। इसका कारण भी है कि चुनाव से पहले भाजपा ने अपने संकल्प पत्र में लोगों से ढेर सारे वादे किए थे। अब जबकि जनता ने उनको प्रचंड बहुमत के साथ दूसरी बार सत्ता सौंप दी है, तो सरकार पर भी अपने वादों को पूरा करने का दबाव रहेगा। नई सरकार से उम्मीदें और शिक्षा क्षेत्र की प्राथमिकता को केन्द्र में रखकर 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' के संवाददाता ने देश भर के लोगों से बात की और उनके विचार जानें । प्रस्तुत है कुछ चुनी हुई प्रतिक्रियाएं –

वर्तमान सरकार से काफी उम्मीदें हैं विशेष कर शिक्षा जगत में । शिक्षा की तस्वीर कई स्तरों पर बदलने की जरूरत है उचित तो यही होगा पाठ्यक्रमों में कुछ शब्द , कुछ अध्याय मात्र बदलने की परंपरा से मुक्ति पाते हुए कुछ बड़े परिवर्तनो की ओर बढ़ा जाए । उच्च शिक्षा में बदलाव एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो जिससे युवाओं को रोजगार मिल सके। खुशी की बात यह है कि 30 मई को नई सरकार के शपथ ग्रहण करने से पहले ही 100 दिन के जो लक्ष्य निर्धारित किये गए, उनमें शिक्षा को भी स्थान दिया गया है । यदि सरकार वास्तव में देश की तस्वीर बदलने के लिए गंभीर है तो उसकी शुरूआत शिक्षा से हो ।

- **अजय यादव,** शासकीय लरंगसाय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामानुजगंज ,छत्तीसगढ़

जम्मू - कश्मीर समेत देश भर के लोगों को मोदी सरकार से काफी अपेक्षाएं हैं । प्रारंभ से ही जम्म - कश्मीर में भेदभाव हुआ है । लोग अपने ही घर से बेघर हो चुके हैं, रोजगार को लेकर यहां कोई रोडमैप नहीं है । हमारे यहां के नेता बहुत ज्यादा प्रभावी नहीं है । ऐसे में हमारी एक मात्र उम्मीद मोदी सरकार है, सरकार जम्मू - कश्मीर से जुड़ी समस्याओं को सुलझाये और लोगों को न्याय दिलाये ।

- **पल्लवी महाजन,** कश्मीर विश्वविद्यालय

नई सरकार से असीमित आशाएं हैं, खासकर हम जैसे युवाओं को । सरकारी विद्यालयों/महाविद्यालयों में शिक्षकों की अनुपस्थिति से विद्यार्थियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ हो रहा है, सरकार को चाहिए कि शिक्षा में बुनियादी सुधार करे, युवाओं को नौकरी के अवसर मुहैया कराये ताकि देश के विकास का वह भी सहभागी बन सके ।

- **पीयूष मेवाड़ा**, राजकीय विधि विश्वविद्यालय, मेवाड़

मोदी सरकार की जीत का कारण है उसकी नीतियां । इस सरकार से मेरी कुछ उम्मीदें हैं जो हर आम आदमी के नजरिए से जरूरी है जैसे अलगाववादियों को देश से निकालना जिससे आम आदमी सुरक्षित महसूस करें भारतीय शिक्षा नीति में संस्कृत और हिंदी को कक्षा आठ तक अनिवार्य करें ताकि देश में सबसे अधिक बोले जाने वाला भाषा को ज्यादा से ज्यादा लोग पढ़े, लिखे और समझे ।

- **प्रलय कुमार बोरा** , गुवाहाटी विश्वविद्यालय असम

नई सरकार से मेरी यही उम्मीद है कि सरकार लड़कियों की सुरक्षा के लिए कदम उठाए और विद्यालय में आत्मरक्षा हेतु शिविर लगाए जाएं और लड़कियों को आत्मरक्षा के गुर सिखाए जाएं ताकि सभी लड़कियां मजबूत हो सके । शिक्षा के क्षेत्र में तुष्टीकरण ना किया जाए, प्रतिभा का उचित सम्मान हो यही मेरी अपेक्षा है । सबको समान अवसर प्राप्त हो ।

- **देवांशी गोयल, इन्द्रप्रस्थ** विश्वविद्यालय दिल्ली

सरकार से मेरी पहली उम्मीद यह है कि सरकार शिक्षा के क्षेत्र में बड़े और अहम कदम उठाएं तथा हमारे देश की जितनी भी सीमाएं हैं सभी को सुरक्षित करें और सारे जवानों की सुरक्षा के लिए कड़े कदम उठाएं । शिक्षा के क्षेत्र में कदम उठाते हुए प्राथमिक शिक्षा पर जोर दें तथा सभी को प्राथमिक शिक्षा का प्रबंध करें ।

- **रत्नेश त्यागी,** अमेठी उत्तर प्रदेश

सरकार हमें रोजगार के साधन उपलब्ध करवाएं तथा सारे विश्वविद्यालयों में बेहतर शिक्षा उपलब्ध करवाएं एवं भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाएं । हम चाहते हैं कि प्रधानमंत्री जी राम जी का मंदिर जल्द से जल्द बनवाएं और जम्मू कश्मीर की धारा 370 को जल्द से जल्द खत्म करें । शिक्षा के क्षेत्र में सरकार शिक्षा नीति बनाएं जिससे सभी को शिक्षा मिले ।

- **शरद त्रिपाठी,** प्रयागराज

भारतीय जनता पार्टी को जिस प्रकार से लोगों ने अपना समर्थन दिया ह उस अप्रत्याशित सफलता के साथ ही मोदी सरकार से लोगों की अपेक्षाएं बहुत बढ़ गई है । निश्चित रूप से आने वाले समय में वोटर राष्ट्रीयता के मुद्दे पर सरकार से जवाब मांगेगी, क्योंकि पूरे चुनाव में सबसे अधिक यही मुद्दा छाया था । शिक्षा को लेकर जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा तैयार किया गया है उसके लिए सरकार को बधाई लेकिन शिक्षा क्षेत्र में बहुत सारे चुनौती हैं । सबसे बड़ी चुनौती क्षेत्रीय भाषा और संस्कृति के साथ - साथ राष्ट्रीय अस्मिता को जोड़कर पाठ्यक्रम बनाना है ।

- **केशव आचार्य,** पटना बिहार

NATIONAL EXECUTIVE
NEC की
झलकियां
VIDYARTHI PARISHAD
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
அகில பாரதிய வித்யார்த்தி பரிஷத்
AKHIL BHARATIYA VIDYARTHI PARISHAD
NATIONAL EXECUTIVE COUNCIL MEETING

RNI No.: DELBIL/2017/73636
Date of Posting: 10-11 June, 2019
Date of Publishing: 8 June, 2019

Postal Regd. No.: DL(C)-11/1409/2017-2019
Post Office: NDGPO, New Delhi